>

Title: Further discussion regarding atrocities committed on minorities in various parts of the country raised by Shri Arif Mohammed Khan on the 8th December, 1998.

16.41 hrs.

श्री मधुकर सरपोतदार (मुम्बई उत्तर-पश्चिम): सभापति जी, हमारे यहां 'एट्रोसिटीज अगेंस्ट माइनोरिटीज' सबजैक्ट पर बातचीत शुरू हुई

... (व्यवधान)

यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि आजादी के ५० वर्ष बीत जाने के बाद आज भी इस सदन में एट्रोसिटीज अगेंस्ट माइनोरिटीज के ऊपर हम चर्चा कर रहे हैं। इस चर्चा के दौरान जो बातें यहां उठाई गयीं वे सुनकर मुझे और भी हैरानी हुई।

... (व्यवधान)

हमारे सामने आज यह सवाल है कि आजादी के ५० वर्ष बीत जाने के बाद भी क्या हम यही बातें करते रहेंगे? यहां पर जो बातें चर्चा के दौरान उठाई गयीं, उसमें कांस्टीटयूशन के प्रावधान की बात बताई गयी। हमारे कांस्टीटयूशन में प्रावधान किया गया है कि सभी लोगों को बराबर का अधिकार और अवसर है। यह हमारे संविधान की प्रस्तावना में लिखा हुआ है। इसके बावजूद भी हम यहां पर माइनोरिटीज के लिए कुछ अधिकार देने की बात करते हैं। जिन बातों को हम भूलना चाहते हैं उन्हीं को यहां दुबारा उठाया जाता है। यह सबसे बड़ी आपत्ति की बात है। मैंने उस दिन माननीय आरिफ मोहम्मद खां जी का भाषण सुना। उन्होंने अपनी स्पीच में बहुत सारी बातें उठाईं और बातों ही बातों में इस देश की मैजोरिटी कम्युनिटी के खिलाफ सर्कास्टिक रिमार्कस पास करने की कोशिश की। जब हम माइनोरिटीज पर एट्रोसिटीज की बात करते हैं तो एक दूसरे के ऊपर चार्ज लगाने से काम नहीं चलेगा। उनको अगर कोई आपत्ति है, वह बात बतानी चाहिए। किसी ने गणपति को दूध पिलाया, यह उन्होंने अपनी बातों में कहा था। एक धर्म के ऊपर इस ढंग से उन्होंने हमला करने की कोशिश की।

... (व्यवधान)

डा. शकील अहमद (मधुबनी) : ये लोग बोल रहे हैं।

... (व्यवधान)

श्री मधुकर सरपोतदार : शकील जी, मैं आपको जानता हूं। यह बात नहीं है कि मैं आपको पहचानता नहीं हूं। आज देश की हालत देखिये। जब हजरत साहब का एक बाल कहीं गुम हो गया तो पूरे देश में हंगामा हुआ था?

द्वारा जारी

श्री सरपोतदार जारी यदि कोई कहता है कि गणपति ने दूध पी लिया है तो उससे क्या किसी को कोई आपत्ति या तकलीफ है? ऐसा कह कर किसी के धर्म की आलोचना की जाती है। ऐसा कौन सा धर्म है जो ब्लाइंड फेथ से आगे बढ़ता है। यदि कोई ऐसी बात बताएगा तो अच्छा होगा। ... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN : Dr. Shakeel Ahmad, he is not yielding. Please sit down.

श्री मधुकर सरपोतदार : अगर माइनॉरिटीज पर अत्याचार की बात की जाती तो हमें कोई आपत्ति नहीं थी। ऐसी बातें करते समय एक दूसरे को टोकने का काम चल रहा है जो कि ठीक नहीं है। कश्मीर में कौन माइनॉरिटी में है? वहां पंडित माइनॉरिटी में हैं। १९९१ के बाद करीबन ४ लाख पंडित जम्मू और दिल्ली में रह रहे हैं। उनके प्रति किसी के दिल में कोई सदभावना नहीं है। ये पंडित देश के हर कोने में हैं क्योंकि वे कश्मीर में रह नहीं सकते। यह अत्याचार किस कारण हुआ?

... (व्यवधान)

मैं अहमद जी से इतना कहूंगा कि जब वह भाषण कर रहे थे तो मैंने कोई टोका-टाकी नहीं की। मैंने हरेक बात ध्यान से सुनी। जो बातें यहां कहीं गईं, उनका ज वाब देने की आवश्यकता है। मुझे मजबूरन यहां बोलने के लिए खड़ा होना पड़ा। नहीं तो मुझे इस बात को कहने की आवश्यकता नहीं थी। जिस ढंग से हर बात को यहां कहा गया, मैं उनका जवाब देना चाहूंगा। मैंने कागज मंगवाए हैं। वे कागज आने पर बाबा साहेब अम्बेडकर ने जो कहा था, मैं पढ़ कर बताऊंगा।

सभापति महोदय : आप शांति से डिसकशन चलने दीजिए। एक दूसरे की बात शांति से सुनिए। ऐसे में हाउस ठीक से चलेगा।

श्री मधुकर सरपोतदार : मैं किताब लेकर नहीं आया। मैंने सोचा था कि पहले एस.सी. और एस.टी. पर डिसकशन होगा और बाद में इस पर डिसकशन होगा। इस दौरान मैं सारे कागज ले आऊंगा लेकिन मैं ला नहीं पाया। यदि वे कागज आ जाते तो

I would like to give each and every citation which respected Baba Saheb Ambedkar has given to this country.

बाबा साहेब अम्बेडकर ने क्या कहा था, स्वामी विवेकानन्द ने क्या कहा था, यह बात यहां उठाई गई। आरिफ मोहम्मद खां की तरफ से हिन्दू धर्म सिखाने की कोशिश हुई। वह यहां नहीं हैं। मैंने उनसे कहा था कि जब मैं अपनी बात यहां रखूंगा तो आप उपस्थित रहना। जो आपत्तिजनक बातें यहां कहनी नहीं चाहिएं, वह उन्होंने कहीं। मैंने जो कुछ कहा है, आप उसे देखिए।

`You be a judge'. Had he committed any mistake, he was prepared to ask for pardon.

मैंने बड़े अच्छे ढंग से हर चीज को देखा। मुझे एक बात का पता लगा।

It is a passing reference as to how people fool others.

उन्होंने ये बातें बताने के लिए गणपति की बात कही। इसलिए मुझे आपत्ति है। जो बातें जिस ढंग से आगे जानी चाहिए थीं, उस ढंग से वे नहीं कही गईं और जो बातें यहां कहने की आवश्यकता नहीं थी, उन्हें यहां उठाया गया जो बड़ी आपत्तिजनक है।

इन्द्रजीत गुप्त जी ने कहा था कि जब मैं अपनी बात यहां कहूंगा तो वह उपस्थित रहेंगे। उन्होंने आर.एम.एस. और बजरंग दल की बात कही। यहां बहुत सारी बातें कही गईं। मैं सदन से पूछना चाहता हूं कि क्या आर.एस.एस. और बजरंग दल ने इस देश के खिलाफ कुछ काम किया? वे इस देश को बचाने वाले लोग हैं।

We are proud of them. Whatever services they are rendering in this country are in the interests of this country and not against the interests of this country. (Interruptions)

सभापति महोदय (प्रो.रीता वर्मा): आपके नेता बोल रहे हैं, आप उन्हें बोलने दीजिए।

... (व्यवधान)

SHRI PRAKASH VISHWANATH PARANJPE (THANE): Pandit Jawaharlal Nehru said: `The RSS is the second military which is controlling this country.'

श्री मधुकर सरपोतदार : यहां बाबरी मस्जिद के ढांचे की बात उठी थी। उसके बारे में डा. बाबासाहेब अम्बेडकर ने जो लिखा था, मैं वही कहना चाहता हूं। बाबरी मस्जिद को मैं मस्जिद नहीं कहता हूं, मैं उसको ढांचा कहता हूं, उसके बारे में उन्होंने यह कहा था -

"Some other Muslim leaders advance other arguments. They say, `Today, the Hindus ask for three sites; tomorrow they will ask for three thousand sites.' It has been made clear to them that the VHP is a great representative and responsible organisation of the Hindus and it has asked for only three sites and that they do not have to take note of all individuals making extravagant demands but there seems to be no will to settle the dispute." (Interruptions)

हमारे देश में वंदेमातरम् की बात उठी थी, मैं पूरे सदन को यह बताना चाहता हूं कि वंदेमातरम् कौन नहीं करता था। क्या डा. अबुल कलाम आजाद वंदेमातरम् नहीं करते थे? मेरा सवाल

... (व्यवधान)

श्री हीरा लाल राय (छपरा): सभापति महोदय, इस तरह का भाषण नहीं होना चाहिए ... (व्यवधान) हिंदुस्तान का पार्लियामेंट सेक्युलर पार्लियामेंट है। यह जो बोल रहे हैं वह देश की स्पिरिट और पुरानी ट्रैडीशंस के खिलाफ है।

MR. CHAIRMAN: He is not yielding. Please sit down.
... (Interruptions)
MR. CHAIRMAN: Shri Rai, please do not disturb others.

श्री मधुकर सरपोतदार : सभापति महोदय, मैं जो भाषण कर रहा हूं वह जो चर्चा यहां हुई हैं, उसके मद्देनजर भाषण कर रहा हूं। मैं उसके अलावा कोई बात नहीं कर रहा हूं, मैं और कोई बात नहीं उठाऊंगा। हर स्पीकर ने जो बातें यहां उठाई थीं, मैं उनके रेफरेन्स में ही बात कर रहा हूं।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : आप डिस्टर्ब मत कीजिए, जब आपका टर्न आयेगा, तब बोलियेगा।

श्री मधुकर सरपोतदार : जब वंदेमातरम् का सवाल आता है तो मैं यह कहना चाहता हूं कि हमारे देश में डा. अबुल कलाम आजाद, डा. रफी अहमद किदवई और अन्य सभी लोगों ने वंदेमातरम् का नारा देकर ही देश को आजादी दिलाई और आजादी के बाद देश में यह चर्चा चल रही है कि वंदेमातरम् कहना ठीक है या नहीं। लेकिन मेरा कहना यह है कि यह आजादी के लिए यह एक मंत्र था और आजादी के बाद भी इसे एक मंत्र मानना चाहिए ... (व्यवधान)

सभापति महोदय : आप बैठिये, आपको बोलने की अनुमति नहीं दी गई है।

श्री मधुकर सरपोतदार : इस देश के किसी भी नागरिक को यह नहीं कहना चाहिए कि वह वंदेमातरम् नहीं कहेंगे।

मैं अपने मुस्लिम दोस्तों से पूछना चाहता हूं कि यहां उस दिन सलमान खान फिल्म एक्टर के बारे में बात निकली थी। उन्होंने जो कुछ मुझे बताया मैं उन्हें बताना चाहता हूं कि यह बोलते हैं कि मुसलमानों के लिए यह आपत्ति क्यों हैं, क्योंकि दिन में करीबन १५ बार ये लोग नमाज पढ़ते हैं, जब नमाज पढ़ते हैं तो उनका सिर मिट्टी को लगता है, जब मिट्टी में सिर लगता है तो वंदेमातरम् कहने में कैसी आपत्ति है, यह मेरा सवाल है, इन्हें उसका जवाब देना चाहिए। उसमें कोई आपत्ति नहीं है। किसी को भी धरती या भूमि के सामने झुकने में कोई आपत्ति नहीं करनी चाहिए ... (व्यवधान)

SHRI RAJESH PILOT (DAUSA): Do not allow such things to happen in this country. It is not correct. You should not force it. There is no question of aapatthi in this secular India. You cannot force it. (Interruptions)
SHRI MADHUKAR SIRPOTDAR : I am giving this just as a suggestion. (Interruptions)
SHRI PRAKASH VISHWANATH PARANJPE (THANE): What is wrong in it? (Interruptions)
SHRI RAJESH PILOT :The way you are saying it is a provocation. It is wrong. (Interruptions) Do not raise that question here. (Interruptions)

सभापति महोदय : सरपोतदार जी, आप अपनी बात कहिये।

... (व्यवधान)

श्री मधुकर सरपोतदार : उन्होंने उस दिन जवाब दिया था इसलिए मैं बोल रहा हूं, उन्होंने बोला था कि मां के पैरों पर कोई सिर नहीं रखता है, लेकिन मां के पैरों के नीचे जन्नत होती है, ऐसा उन्होंने कहा था

... (व्यवधान)

श्रीमती सूर्यकांता पाटील : आजादी की लड़ाई में आपने वंदेमातरम् क्यों नहीं कहा था, तब तो आप अंग्रेजों के साथ थे। अभी आप क्यों ढोंग कर रहे हो?

... (व्यवधान)

श्री मधुकर सरपोतदार (मुम्बई उत्तर-पश्चिम): मैंने भी आजादी की लड़ाई लड़ी है। यह कहना बिल्कुल गलत है कि सिर्फ आप लोगों ने आजादी की लड़ाई लड़ी है। मैं भी आजादी की लड़ाई लड़ चुका हूं।

सभापति महोदया, बाबा साहब अम्बेडकर ने कहा था

... (व्यवधान)

सभापति महोदय (प्रो.रीता वर्मा): सरपोतदार जी, आप जो बोल रहे थे, उसी पर आईए। आप अपनी बात कहिए।

... (व्यवधान)

श्री रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली): सभापति महोदया, यह क्या हो रहा है, क्या यह अल्पसंख्यकों के ऊपर अत्याचारों के विषय पर चर्चा हो रही है? यह क्या भाषण हो रहा है? महोदया, यह तो नियम में है कि यहां पर ऐसा कोई भाषण नहीं होगा।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : रघुवंश प्रसाद सिंह जी, आप बैठिए। यह क्या बात है कि जब तक मैं खड़ी नहीं होती हूं, तब तक आप बैठते नहीं हैं, ऐसा क्यों?

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : क्या आप चुप नहीं होंगे। आप चुप बैठिए। जब आपकी बोलने की बारी आए, तब आप जवाब दीजिए। आप लोग शान्ति से सुनिए।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : कवाड़े जी, आप बैठिए। कवाड़े जी, जब मैं खड़ी हूं, तो आपको बैठना चाहिए। कवाड़े जी क्या आप आसन की भी आज्ञा नहीं मानेंगे?

... (व्यवधान)

श्री मधुकर सरपोतदार : धन्यवाद मैडम।

सभापति महोदया, मैं बताना चाहूंगा कि हमारे श्री पी. शिव शंकर जी यहां पर भाषण कर रहे थे। मैंने उनकी पूरी स्पीच सुनी।

... (व्यवधान)

श्री पी. शिव शंकर (तेनाली): सभापति महोदया, मैं आपके माध्यम से माननीय सरपोतदार जी से इतना ही निवेदन करना चाहता हूं कि प्रोवोक मत कीजिए।

... (व्यवधान)

श्री मधुकर सरपोतदार : सभापति महोदया, मैं भी आखिर डैमोक्रेटिक हूं। मैं क्यों न बोलूं।

... (व्यवधान)

श्री प्रकाश विश्वनाथ परांजपे (ठाणे) : सभापति महोदया, जब उन्होंने श्री गणपति जी के बारे में बात करके हमें प्रोवोक किया, तो हमने आपको सुना, फिर आप हमें क्यों नहीं सुन रहे हैं

... (व्यवधान)

श्री मधुकर सरपोतदार : सभापति महोदया, श्री शिव शंकर जी, इस सदन में बहुत सालों से हैं। ऐसा नहीं है कि आपको इस सदन के बारे में जानकारी नहीं है। आपका नाम माता-पिता ने पी. शिवशंकर रखा है और शिव हमारे भगवान हैं और हमें रास्ता बताने वाले हैं, लेकिन आप हमें रास्ता न बताकर भटकाने का प्रयास कर रहे हैं, यह ठीक नहीं है।

सभापति महोदया, मैं कहना चाहता हूं कि जो इस देश से नफरत करते हैं, उन्हें चुन-चन कर हमें सामने लाना चाहिए। आज हमें सबसे बड़ी शक्ति और सबसे अधिक ऐसे लोगों की जरूरत है जो इस देश से प्यार करते हैं। आज हमें देश से प्यार करने वाले लोग चाहिए, फिर चाहे वे विश्व हिन्दू परिषद के है, बजरंग दल के है या फिर किसी भी दल के हों, हम उसका स्वागत करते हैं। यदि आप भी देश प्रेम करते हैं, तो हम आपका भी स्वागत करते हैं। मैंने यह भी देखा है कि नरसिंह राव जी, आजाद कश्मीर के बारे में बात कर रहे थे, तो उन्होंने कहा था कि भविष्य में सिर्फ आजाद कश्मीर के बारे में बात होगी, लेकिन उसके बाद, पता नहीं क्या हुआ कि हम आजाद कश्मीर के बारे में बात ही नहीं करते हैं। जब हमारे पंथ प्रधान वहां गए थे, तो उन्होंने जवाब देते हुए कहा था कि आजाद काश्मीर हमारा है और जब तक आजाद काश्मीर के बारे में बात नहीं होगी तब तक आगे बात नहीं करेंगे और हम आजाद कश्मीर सहित अपने देश की एक इंच भूमि भी

दूसरे को नहीं देंगे। उनके इस वचन की रक्षा करना हमारा आप सबका धर्म है। वह इस सदन का प्रस्ताव है। इस पार्लियामेंट ने पारित किया है। इस सदन द्वारा पारित प्रस्ताव की इज्जत करने का काम किसका है, मैं इस सदन से, आपसे पूछना चाहता हूं?

सभापति महोदया, रोज लोग मरते हैं, क्या कारण हैं कि जम्मू कश्मीर में नार्थ ईस्ट में रोज हमारे लोग मरते हैं। अभी आज सुबह ही बताया गया कि नॉर्थ इस्ट में

on an average so

आदमी मरे ये कौन लोग हैं, ये अपने ही आदमी हैं जिनको दूसरे देश के आतंकवादी गोलियों का निशाना बना रहे हैं और हम लोग अपने आदमियों की रक्षा नहीं कर पा रहे हैं। मैं कहता हूं कि आज देश की सबसे बड़ी जरूरत यह है कि हमें अपने देश के नागरिकों की रक्षा करने के लिए यदि उन आतंकवादियों को मौत के घाट भी उतारना पड़े, तो उसमें संकोच नहीं करना चाहिए। जो लोग अपने देश के भोले-भाले नागरिकों को बिना कसूर गोलियों से भूनें उनके साथ किसी प्रकार का कोई कम्प्रोमाइज नहीं करना चाहिए। यदि आपके घर के किसी सदस्य को कोई मार दे, तो क्या आप देखते रहेंगे? जो हमारे देश के नागरिक नहीं हैं, जिनसे हमारा कोई वास्ता नहीं है वे हमारे देश के लोगों को मारते है और हम उनके बारे में कुछ नहीं करते हैं, सिर्फ यहां बात करते हैं और कुछ नहीं होता है।

श्री सरपोतदार जारी यह हमारे देश की सबसे बड़ी आपत्ति है।

डा. शकील अहमद (मधुबनी) : सभापति जी, अभी श्रीकृष्ण कमीशन की रिपोर्ट आ गयी है, उसके बारे में भी आप कुछ बोलिये।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : आप बैठिये।

... (व्यवधान)

श्री मधुकर सरपोतदार : सरकारिया कमीशन के बारे में कहूंगा।

... (व्यवधान)

डा. शकील अहमद : सरकारिया कमीशन की रिपोर्ट में आपकी पार्टी के सब लोगों का नाम है।

... (व्यवधान)

आप इनसे पूछिये कि इन्हें उसके बारे में कुछ कहना है। ... (व्यवधान)

श्री मधुकर सरपोतदार : डा शकील अहमद जी, मैं आपको कहना चाहता हूं, मैं सारे सदन में ऐलान करना चाहूंगा कि श्रीकृष्ण कमीशन के बारे में आपको जो जानकारी है। ... (व्यवधान)

डा. शकील अहमद : उसमें आपका और आपकी पार्टी के सब लोगों का नाम है। ... (व्यवधान)

श्री मधुकर सरपोतदार : उसके बारे में आपको जो जानकारी है, उससे कहीं ज्यादा जानकारी मुझे है। आप हाउस में उस पर बहस करने के लिए कहिए, मैं डिसक्शन करने के लिए तैयार हूं।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : आप बैठ जाइये।

श्री मधुकर सरपोतदार : सरकारिया कमीशन ने क्या कहा है, वह मुझे मालूम है। उसे आप नहीं जानते हैं। मुम्बई में क्या हुआ, आप नहीं जानते हैं। बिहार में क्या हुआ, मैं नहीं जानता हूं। जो जानकारी नहीं है, उसके बारे में बात करना ठीक नहीं है।

If they come across such atrocities, they should straightaway walk to the Home Minister and tell him that such and such atrocity has happened and that he must take care of it. That should be the approach. Instead of doing that, we are making allegations and counter allegations and for 50 years, we have been again and again discussing the same subject of minorities, majorities and others. We being the natives of this great country must behave like great country men. Let us work together for the prosperity, progress and in the larger interest of this country.

SHRI G.M. BANATWALLA (PONNANI): Sir, I am on a point of order under Rule 376.

MR. CHAIRMAN : What is your point of order?

SHRI G.M. BANATWALLA : Sir, a Member from Shiv Sena has spoken now. So, it for the Member of the Muslim League to speak now. Please call me to speak.

MR. CHAIRMAN: There is no point of order.

SHRI T.R. BAALU (SOUTH MADRAS): Mr. Chairman, I would like to record my views on behalf of the DMK on the subject matter of atrocities on minorities brought before the House by hon. Arif Mohammad Khan. It is not only that this House and our great nation but the whole world had observed the Human Rights Day on the 10th December and we are proud that we are one among the signatories of the universal declaration of human rights. But Sir, are we strictly adopting the declaration in letter and spirit? If we really practice it, then what is the necessity to discuss atrocities on minorities? Yes, we preach and proclaim but we do not adopt and practice it. Sir, are we able to maintain peace and tranquility which was in vogue about one or two decades ago? It is diminishing day by day. The confidence reposed by the minorities on the Government is diminishing. Why is it diminishing day by day? We have to find out an answer to this question.

We know that Dr. Ambedkar, Father of the Constitution, was a born Hindu. What made him to adopt Buddhism at the fag end of his life? Raja Ram Mohan Roy was a born Hindu. What made him to establish and profess Brahma Samaj? Lord Buddha was a born Hindu. What was the necessity for him to adopt Buddhism during his life? Guru Nanak, Father of Sikhism, was a born Hindu. What made him to switch over to Sikhism? Saint Mahavir was a born Hindu. What made him to switch over to Jainism? Ramalinga Adigalar, a Tamil saint, was a born Hindu. What made him to adopt Samarasa Sutha Sanmarka Sangam, that is, secular society? It was because the so-called upper caste people who professed vedic religion divided and sub-divided and established discrimination, disparity, untouchability and even unseeability. The upper class people spread all over what is called Varnashramam Maya Srishtam, that is, casteism was created by God.

Sir, I belong to Self Respect Movement.

I belong to the rationalistic movement which is now actively led by Dr. Kalaignar Karunanidhi. At the same time, Dr. Kalaignar Karunanidhi himself adopts and he preaches and practises this.

We were to elect five Members of Parliament to Rajya Sabha. Out of the five, he has elected Shri M.A. Khader as one of the Rajya Sabha Members. Shri Khader is a Muslim. Shri Rahman Khan is one of the Cabinet Ministers in the Tamil Nadu Government. Shri S.A.M. Hussain is the Joint Secretary of the Propaganda Wing of the DMK Party. Shri Abdul Kareem holds the position of the Vice-Chancellor of the University of Agriculture, Coimbatore. Shri Salihue is the Vice-Chancellor of the Madurai-Kamaraj University. In the districts of Salem, Theni and Tuticorin, Shri Nizamuddin, Shri Basheer Ahmed and Shri Allik Ferozkhan are holding the posts of the Collectors respectively. At the same time, I am very proud to record that the DMK Government has extended the backward class status not only to the Tamil-speaking Muslim community but also to the Urdu-speaking Muslim community and has rendered social justice to them.

Now, I come to the statement of the Chairman of the minority panel. The Chairman of the National Commission for Minorities Dr. Tahir Mahmood has said:

"It was a matter of grave concern that the basic spirit of the Constitution was being undermined by certain groups and individuals."

This is a statement made by no less a person than Dr. Tahir Mahmood, the Chairman of the National Commission for Minorities.

Again, I would like to quote the Hindustan Times dated the 26th November, 1998 which said:

"Criticising the style of functioning of the BJP and its associate organisations without naming them, he said that "personal beliefs and group ideologies are now being allowed more freely than before to eclipse the equality and justice provision of the Constitution to the detriment of the minorities.""

This is the statement made by Dr. Tahir Mahmood, Chairman of the National Commission for Minorities.

What is the reaction of Shri Tohra, the President of the Shiromani Gurdwara Prabandhak Committee? I quote the Indian Express dated the 27th November, 1998 which said:

"Shiromani Gurdwara Prabandhak Committee President Gurcharan Singh Tohra today said that minorities in the country have been feeling unsafe since Independence.

In an obvious reference to the attacks on Christian missionaries by Hindu fundamentalists, he said at a press conference here this morning that minorities' shrines across the country were unsafe."

This goes to show that an ally of the ruling party, the Government, is himself not safe.

In the wake of the implementation of the Kalpa Yojana in Uttar Pradesh, making it compulsory to sing the Vande Mataram and the Sarawathi Vandana, the Islamic Board Chairman Mr. Abdul Hassan Nadvi issued a statement as to withdrawal of their wards belonging to the Muslim community from the educational institutions in Uttar Pradesh. By the by, his house had been raided the next day. Why was it raided?

The Muslim community and the Christian community are vulnerable to be attacked. The human rights wing of the Christian community has stated that 84 incidents against them took place during 1998 in the BJP Rule and the incidents took place in eight months! But at the same time, from 1964 to 1996, in a period of 32 years, 33 incidents only took place.

Is this the way of conducting the Government? The Government is helpless. More than two and a half crore Christians are spearheading the revolt. They are fighting for their rights. All along they were silent without having any agitation, now they came to the streets holding agitation. They want protection to their lives and properties. The minority community which is not capable of defending itself, their lives and property, subjected to frequent attacks; now has come out in the open fight for their rights. The frequency of attacks on minority communities, especially of Christian minorities, are increasing day by day. The rate of attacks and the rate of vandalism is increasing day by day.

Sir, in Delhi, as you all know, serving of wine was banned in churches. As per Christian religion, on certain occassions they serve wine in the churches. But the then BJP Government wanted to ban this under the guise that it is against the ethics of Hinduism. Was it fair on their part to ban? In Rajkot, Sangh Parivar activists burnt copies of Bible after raiding the girls' hostel. In Bihar, Father Chrisnadas was assaulted and paraded nakedly on the road. In Hazaribagh, Father Thomas was murdered by some activists. In Maharashtra, Father Antony was assaulted with iron bars, allegedly by some activists. In Ludhiana, prayer meeting of Christians was disrupted. In Gujarat, armed men vandalised tribal Christian-households at Ojada. In Maharashtra once again, some activists attacked the Catholic Hospital Association of India at Latur, where the medical aid was extended to the earthquake victims by Christians. In Haryana, 200-year old cemetery, the Tomb of Col. James Skinner, was damaged at Hansi. In Kurnool, Andhra Pradesh, Gipsons' Central Baptist Church was threatened with demolition by some activists. In Kerala, Little Flower Church was vandalised and the crucifix desecrated. What happened in Jhabua? On 23nd September, 1998 a shameful incident took place. Four Christian nuns were raped

in the early morning. ... (Interruptions) It is a gruesome gang rape and a heinous crime against four nuns at an obscure hamlet of Jhabua which had not only sent shock waves to the rest of India but every Indian have to hang his head in shame... (Interruptions)

In the aftermath of dismantling Babri Masjid, there was unabated arson and looting in Mumbai and the tyranny unleased against the Muslim minority, the Government has constituted Sri Krishna Inquiry Commission. It has submitted a Report wherein it has stated that the people who were in power and police officials were the cause of action. What action they have taken? Nothing.

What happened in Meerut in Uttar Pradesh? Muslims were attacked and an Inquiry Commission was instituted and the Report was submitted. But the Report was not yet published. Why is it so?

You know pretty well what Article 25 states. It is regarding the freedom of conscience and the right to freely profess, practice and propagation of religion. Article 14 is regarding equality before law. Article 15 states that the State shall not discriminate against any citizen of India by caste, creed, religion, place or birth, and so on. Are we maintaining any equality before law? Are we not responsible for that? We have to maintain equality before law. Some born Hindus have converted themselves to other religions. What was the necessity for that? It was because they could not bear the brunt of the atrocities of their Vedic religious people. After such incidents, let us see what was the reaction of the head of the Bajrang Dal. Shri Surendra Kumar Jain, National Convener of the Bajrang Dal says:

"We have declared to launch the second `Quit India Movement' against the Christian Missions in India."

This was the statement made by no less a person than by Shri Surendra Kumar Jain, National Convener of the Bajrang Dal. Then, Shri B.L. Sharma made a statement which says:

"The spurt in violence is the expression of anger of patriotic Hindu youth against the anti-national force. The Missionaries should pack up and leave India; the VHP will not shut its eyes to the activities of these traitors."

This was the statement made by Shri B.L. Sharma.

MR. CHAIRMAN (SHRI KHAGAPATI PRADHANI): Shri Baalu, please try to conclude.

Sir, it is high time to rise above party politics, religion, caste, creed etc. We have to create confidence among the minorities and we have to see that they are very well supported, their interests are safeguarded well and their life and property are protected. Past is past. Let us forget what had happened until now. Let us forget the enmities between one religion and the other and one caste and the other.

MR. CHAIRMAN : Shri Baalu, please conclude.

Before I conclude, I would like to quote Saint Thiruvalluvar in Tamil. This is the kural which my leader Dr. Kalaignar Karunanidhi quotes very often in the midst of public. It says:

"Pirappokkum ella oyirkum sirappovva

sei thozhil vetrumaiyaan."

It means that all human beings are alike at birth; their acts bring about variations in their worthiness.

Then, I would like to quote Kanian Poongunranar. He says:

"Yaadhum oore yavarum kelir."

It means that every place is our place; everybody is our kith and kin.

With these words, I would like to draw the attention of my friends on the other side to see that the interests of the minorities are protected as per Articles 25 and 28 of the Constitution.

SHRI PURNO A. SANGMA (TURA): Mr. Chairman, Sir, the 10th of this month was the occasion of the Golden Jubilee of the adoption of the UN Charter on Human Rights. The rights of the minorities have a special place in the Bills of Human Rights.

17.39 hrs (Mr. Speaker in the Chair)

Sir, I would have expected this Government to take an initiative either to pass a unanimous resolution on that day to celebrate the Golden Jubilee of the adoption of the UN Charter on Human Rights or at least during today's debate, as has been contemplated earlier. I would still urge the Government to find out some ways and means to see whether we can celebrate the Golden Jubilee of the adoption of the UN Charter on Human Rights. It can still be debated in Parliament.

As far as the atrocities on minorities are concerned, I would not like to go through the incidents or the specific incidents which have already been mentioned by many hon. Members who participated in this debate. I would only like to point out one fact, that is, ever since this Government came to power, there has been an increase in atrocities on the minorities.

Secondly, what I am more worried about is the response of the Central Government. ... (Interruptions) I am not going to attack anybody. In response to the question of Prof. P.J. Kurien, hon. Minister of Home Affairs dismissed it as a State subject and that it is a law and order problem.

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI L.K. ADVANI): Which subject?

SHRI PURNO A. SANGMA : This is about the atrocities. Of course, that was a Starred Question. What I want to say is that these are not mere incidents that are taking place and that they can dismiss it as a law and order situation. It has something to do with their ideology. It has something to do with the ideology of Sangh Parivar.

Since there is no time, I want to come to that aspect straightaway. I want to deal with the situation from two aspects of ideological framework of the BJP and the Sangh Parivar and the theoretical framework of the BJP and the Sangh Parivar. What is the ideological aspect of this? The BJP manifesto is very very clear. What does the BJP manifesto say? You talk about cultural nationalism. What is cultural nationalism? The cultural nationalism is that you are committed to the concept of one nation, one people and one culture. It is very much there in their manifesto of 1998. I quote the manifesto:

"The BJP is committed to the concept of one nation, one people and one culture. Our nationalist vision is not merely bound by the geographical or political identity of Bharat but is referred by our timeless and cultural heritage. The cultural heritage, which is central to all regions, religions and languages, is a civilisational identity and constitutes a cultural nationalism in India which is the core of `Hindutava'. That is the ideology of one nation, one people and one culture.

Another example that I would like to give is an attempt to saffronise our education system. I have a great respect for the Minister of Human Resource Development, Dr. Murli Manohar Joshi. But the way the agenda of the Government was sought to be pushed through in the recently convened Conference of the Education Ministers is something which I personally could not believe that a respected person like Dr. Joshi could do this. We are aware how an RSS activist, Shri P.D. Chitingviana - I do not know how to pronounce it - was asked to preserve the theory of this saffronisation of education.

We are all aware of the attempt that was made to introduce Saraswati Vandana and Vande Mataram; the attempt to introduce Sanskrit as a compulsory subject. We are all aware of that. Now the question is this. Has it come just like that? Is it a new idea? No, it is not. It is very much in the ideological framework of the BJP and is being carried out by its constituents, the RSS, VHP and Bajrang Dal. That is the danger. The RSS and Bajrang Dal were very old organisations but they have not been that active in the past. Why have they suddenly become so

active? Why have they suddenly become so much anti-Christians, anti-Muslims and anti-minorities? It is because they know that they have the backing of the Government of the day. They know that it is very much in tune with the ideological framework of one nation, one culture, one people, Hindutva.

I was surprised to read a report on the idea of the hon. Home Minister, Shri Advani on Buddhism. On the 6th of November, 1998 when the hon. Home Minister was inaugurating the World Unity in Buddha's Trinity at Saranath, he Hindunised and Aryanised Buddhism. What did you say? Sir, he said, I quote:

"Buddha only reinstated the ancient ideals of the Hindu Aryan civilisation."

The Home Minister went on to say:

"Gautama Buddha was an incarnation of Vishnu and his philosophy flowed from Bhagawad Gita."

We all know what was the reaction of the Buddhist scholars on this reported interpretation of the hon. Home Minister about Buddhism. What is happening today? It is because of the patronage in thinking, in philosophy and in ideology which are emanating from the leaders of the Government of the day.

The second aspect is the theoretical framework. What is the theoretical framework of the ruling party? We know about several statements made by the leaders of the VHP, RSS and Bajrang Dal. I do not like to name them because somebody will object that; I cannot take their names because they will not be able to defend themselves. But everyone of us know that the most prominent leaders of those organisations are seeing that Christians are anti-national. There should be second Quit India Movement. The Churches should be closed because they serve liquor in the Church. ... (Interruptions)

SHRI UTTAMSINGH PAWAR (JALNA): Nobody has said like that. ... (Interruptions)

SHRI HARIN PATHAK (AHMEDABAD): The remark was against some of the missionaries and not on the Christian community. ... (Interruptions)

... (Interruptions)

SHRI KHARABELA SWAIN : Please do not make the official statement here. (Interruptions). We are also from the RSS. (Interruptions).

SHRI HARIN PATHAK (AHMEDABAD): Nobody has said. (Interruptions).

श्रीमती भावना कर्दम दवे (सुरेन्द्रनगर): हम आपके बीच में बोलना अच्छा नहीं लगता। आपसे हमें ऐसी उम्मीद नहीं थी कि आप भी ऐसा बोलेंगे।

... (व्यवधान)

... (व्यवधान)

श्री प्रभुदयाल कठेरिया (फिरोजाबाद) : संगमा जी, आपसे हमें ऐसी उम्मीद नहीं थी।

... (व्यवधान)

श्री रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली): क्या आप विद्वान लोगों को उपदेश दीजिएगा। ... (व्यवधान) उन्हें सीखाइयेगा।

... (व्यवधान)

SHRI TAPAN SIKDAR (DUMDUM): Please do not quote these types of concocted stories. (Interruptions).

SHRI KHARABELA SWAIN : You are a part of Great India. (Interruptions). I treat you as one of the great Indian.

SHRI P.C. THOMAS (MUVATTUPUZHA): The statement of the VHP leaders have come in the Press. They have not denied. (Interruptions).

SHRI PURNO A. SANGMA : All right, I will modify my statement. It is reported. (Interruptions). It could be wrong. I will be happy if it is wrong. But it is reported that the former Minister of Delhi, Shri Rajindra Gupta has made this statement. I think, it is because of the ignorance of Christian religion. I do not blame him. He alleged that the liquors are being served in the Church. Therefore, under the Excise Rules, it should not be allowed and it should be closed. I have read it. I do not know how you did not read it. (Interruptions). No, because you are challenging my statement, I am just saying it. (Interruptions).

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI L.K. ADVANI): If it had been someone else who was speaking, I would not have interrupted him. I would have waited till the end. But it is Shri Sangma, the respected former Speaker of this House and whom I have held in high esteem and great respect, I wish he had not merely read one report from somewhere, and as far as I recall, even that report did not say what he says now. But immediately on the day this was mentioned in the House, the hon. Prime Minister stood up to say that so far as this Government is concerned, my Party is concerned, we cannot reconcile with any such proposal. So, if there is any such proposal, the Delhi Government would be directed to immediately end it because they do not understand. Instead of citing that, when a former Speaker and the leading Member of the Congress Party repeats that kind of a thing, the damage is done not merely to the BJP, the damage is not done merely to this Government, the damage is done to the whole country. This is what I would like to repeat again and again. (Interruptions). Therefore, I would plead with you that if you are to quote someone, let us know where you are quoting from. Then, in this particular case, the whole House had heard the official view of the Government and the Prime Minister. There was no point in quoting it again. (Interruptions).

SHRI PURNO A. SANGMA : Maybe I used the word `closed' and Shri Rajindra Gupta did not use the word `closed'. Unfortunately, I do not have that paper with me, but I have my notes. The language he used is: `Churches...(Interruptions).

SHRI L.K. ADVANI: The hon. Prime Minister has given the official view of the Government and not the Party. (Interruptions).

SHRI PURNO A. SANGMA :I know it. Shri Advani, that was later on.

SHRI L.K. ADVANI: Shri Sangma, the day this news item appeared in the morning newspapers, the matter was raised in the House and immediately the hon. Prime Minister, without even caring to go and enquire from the Delhi Government, said what is the Government's view and what is the Party's view. Everyone thought that the whole matter was closed. After three months, a leader of the party is talking about the atrocity on minorities and raises this issue which was closed by the whole House.

Is it not something that is going to damage the whole country?

SHRI PURNO A. SANGMA : Mr. Home Minister, I started my speech by saying that I was not going into the incidents and the specific incident that had taken place. I am going through the ideological and theoretical framework of the BJP and the Sangh Pariwar. That is the statement I made. Having made that statement, I a trying to prove the theoretical framework of the people. I am not going into the incident.

SHRI L.K. ADVANI: Shri Sangma, if I would have to reply to whatever you have said, I would have done quoting my manifesto as being the ideology of BJP. But you are referring to the incident relating to the Delhi Government, relating to the church and in that context, knowing fullwell that the matter was satisfactorily replied to and the Government immediately told that it was not to be done, the matter ended. Do you want to repeat it? Is it fair? Please go ahead, because this is all that you have in so far as atrocities on minorities are concerned.

SHRI PURNO A. SANGMA : It is not all that I have. I have so many things to say. I think because of the constraint of time I cannot mention them. I was trying to explain the theoretical framework. Why do people in the BJP and in the Sangh Pariwar should have the notion, that wrong thinking, that Christians are anti-national? (Interruptions)

SHRI HARIN PATHAK (AHMEDABAD): No; you are wrong.

SHRI KHARABELA SWAIN (BALASORE): I am happy that it is true.

SHRI PURNO A. SANGMA : But it has been said. It has been said repeatedly.

SHRI HARIN PATHAK : It is not a fact. It is not correct.

MAJOR GENERAL BHUVAN CHANDRA KHANDURI, AVSM : Because somebody once said it, will you accuse the others?

MR. SPEAKER: Shri Khanduri, please do not disturb him.

... (Interruptions)

SHRI PURNO A. SANGMA : I am very happy. Your response today clearly shows that you are beginning to understand. (Interruptions)

SHRI FRANCISCO SARDINHA (MARMAGOA): You are wasting the time of the House.

SHRI L.K. ADVANI: No one is wasting the time of the House. Because observations are being made of a nature which I believe are hurting the country.

Let me strike a personal note, Shri Sangma, the hon. former Speaker has paid me a compliment that I am starting to understand today.

Let me mention that so far as the Christian community is concerned, right from my childhood my education has been in a Catholic School, in a Missionary School. There is no question of regarding Christians as anti-national or anything of the type. In fact, the only occasion was when I had an occasion to visit my birthplace Karachi only few days ago in the last l5 years. The High Commissioner of Pakistan came and asked me, "Are you particular in visiting any particular place in Karachi?". I said that if I would like to go to any place, it would be my school, St. Patricks High School and that is my choice." I did go there. I am only emphasising that so far as this Government and this party are concerned, about whom I am proud, this Government or party, about whose ideology I am proud, to draw this conclusion that its ideology regards Christians as anti-national, it is an irony.

SHRI HARIN PATHAK : Take note of this also. He is one of the famous ideologists.

SHRI PURNO A. SANGMA : That is precisely I want to know, Mr. Home Minister.
18.00 hrs.
I knew that the hon. Home Minister was the product of St. Patricks School, Karachi. I know that. Many people who matter in this country whether they are politicians or bureaucrats, whether they are diplomats or media journalists, whether they are industrialists, many of them have been educated in Christian institutions; and we are proud of that because that is our contribution to this country. If you accept that, why is it that thousands of Bibles are being burnt today? Why? Why are churches being attacked today? This is my question. Why are dead bodies being exhumed from the graveyards? This is the question that I want to ask.

श्री वीरेन्द्र सिंह (मिर्जापुर): अध्यक्ष जी, मुझे घोर आपत्ति इस बात की है कि संगमा जी कह रहे हैं कि केवल ईसाई मिशनरी में पढ़ने वाले लोग ही अच्छे हैं।

MR. SPEAKER: He is not yielding. Shri Virendra Kumar, he is not yielding. Please take your seat.

श्री वीरेन्द्र सिंह : बहुत से गांव में पढ़ने वाले लोग, नगरपालिका के विद्यालय में पढ़ने वाले लोग, जिला परिषद के विद्यालयों में पढ़ने वाले लोग इस देश में सबसे बड़े महान पुरुष हुए हैं। आप यह भ्रम मत रखिये कि खाली ईसाई मिशनरी में पढ़ने वाले लोग ही अच्छे होते हैं। आप क्या बात करते हैं?

SHRI PURNO A. SANGMA : I think it is becoming very uncomfortable for the Ruling Party. I do not want to proceed further. Let me caution. Shri Ram Vilas Paswan made a very significant statement on this debate. Look at our borders. It is the minorities who are defending our borders. I want to go one step further that if India is projected in the whole world being a country which is anti-Muslims, anti-Christians, we have to remember that we will get further isolated. We are already isolated because of many things that had happened in our country. You talk of Babri Masjid. You talk of nuclear tests. We already stand isolated. If we continue like that, I do not think it will be good for our country. After all, basically the world is divided into two blocs. Let me be very frank and blunt about it. India, in this process of globalisation, cannot afford to be isolated by the world. Please remember that. I am happy that the Home Minister today is very assertive. I am very happy that of late the Prime Minister has also started saying that he is very assertive because he has got three of his most trusted people in the Ministry. But the only comment that I would like to make Mr. Home Minister is that your assertiveness or the Prime Minister's assertiveness is, perhaps, belated. It is already late. I am told and I know that every morning the Hindus do a Pooja called Surya Namaskar. That is to prevent blindness. I read it somewhere that it is to prevent blindness. But unfortunately, Shri Advani and also the Prime Minister are doing Surya Namaskar after they have become blind. But I can tell you that the people of India and the country are not blind. That has been proved in the recent elections of Delhi, Rajasthan and Madhya Pradesh. Thank you, Mr. Speaker.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री (कुमारी उमा भारती): अध्यक्ष महोदय, मुझे आपने बोलने का अवसर दिया, इसके लिए धन्यवाद देती हूं, लेकिन मुझे यह बता दीजिए कि मुझे कितनी देर बोलना है?

अध्यक्ष महोदय : पांच मिनट।

कुमारी उमा भारती : कृपया दस मिनट दीजिए।

अभी संगमा साहब ने भाषण दिया। जब संगमा साहब स्पीकर थे, मैं उनका बहुत आदर करती थी

... (व्यवधान)

हां, करती थी, क्योंकि आज उन्होंने जो स्पीच दी है, मुझे संगमा साहब से इस तरह के भाषण की आशा नहीं थी।

SHRI PURNO A. SANGMA (TURA): That is precisely I wanted to know, Mr. Home Minister. I knew that the hon. Home Minister was the product of St. Patricks School, Karachi. I know that. Many people who matter in this country whether they are politicians or bureaucrats, whether they are diplomats or media journalists, whether they are industrialists, many of them have been educated in Christian institutions; and we are proud of that because that is our contribution to this country. If you accept that, why is it that thousands of Bibles are being burnt today? Why? Why are churches being attacked today? This is my question. Why are dead bodies being exhumed from the graveyards? This is the question that I want to ask.

श्री वीरेन्द्र सिंह (मिर्जापुर): अध्यक्ष जी, मुझे घोर आपत्ति इस बात की है कि संगमा जी कह रहे हैं कि केवल ईसाई मिशनरी में पढ़ने वाले लोग ही अच्छे हैं।

MR. SPEAKER: He is not yielding. Shri Virendra Kumar, he is not yielding. Please take your seat.

श्री वीरेन्द्र सिंह (मिर्जापुर): बहुत से गांव में पढ़ने वाले लोग, नगरपालिका के विद्यालय में पढ़ने वाले लोग, जिला परिषद के विद्यालयों में पढ़ने वाले लोग इस देश में सबसे बड़े महान पुरुष हुए हैं। आप यह भ्रम मत रखिये कि खाली ईसाई मिशनरी में पढ़ने वाले लोग ही अच्छे होते हैं। आप क्या बात करते हैं?

SHRI PURNO A. SANGMA (TURA): I think it is becoming very uncomfortable for the Ruling Party. I do not want to proceed further. Let me caution. Shri Ram Vilas Paswan made a very significant statement on this debate. Look at our borders. It is the minorities who are defending our borders. I want to go one step further that

if India is projected in the whole world being a country which is anti-Muslims, anti-Christians, we have to remember that we will get further isolated. We are already isolated because of many things that had happened in our country. You talk of Babri Masjid. You talk of nuclear tests. We already stand isolated. If we continue like that, I do not think it will be good for our country. After all, basically the world is divided into two blocs. Let me be very frank and blunt about it. India, in this process of globalisation, cannot afford to be isolated by the world. Please remember that. I am happy that the Home Minister today is very assertive. I am very happy that of late the Prime Minister has also started saying that he is very assertive because he has got three of his most trusted people in the Ministry. But the only comment that I would like to make Mr. Home Minister is that your assertiveness or the Prime Minister's assertiveness is, perhaps, belated. It is already late. I am told and I know that every morning the Hindus do a Pooja called Surya Namaskar. That is to prevent blindness. I read it somewhere that it is to prevent blindness. But unfortunately, Shri Advani and also the Prime Minister are doing Surya Namaskar after they have become blind. But I can tell you that the people of India and the country are not blind. That has been proved in the recent elections of Delhi, Rajasthan and Madhya Pradesh. Thank you, Mr. Speaker.
(ends)

१८०४ बजे

मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री (कुमारी उमा भारती): अध्यक्ष महोदय, मुझे आपने बोलने का अवसर दिया, इसके लिए धन्यवाद देती हूं, लेकिन मुझे यह बता दीजिए कि मुझे कितनी देर बोलना है?

अध्यक्ष महोदय : पांच मिनट।

कुमारी उमा भारती (खजुराहो): कृपया दस मिनट दीजिए।

अभी संगमा साहब ने भाषण दिया। जब संगमा साहब स्पीकर थे, मैं उनका बहुत आदर करती थी

... (व्यवधान)

हां, करती थी, क्योंकि आज उन्होंने जो स्पीच दी है, मुझे संगमा साहब से इस तरह के भाषण की आशा नहीं थी।

श्आपने आडवाणी जी पर एक कमेंट किया है ठ

Now you are beginning to understand.'

मैं आप पर भी यह कमेंट करूंगी ठ

Now you are beginning to lose your understanding.'

आपने जिस तरह का भाषण दिया है और जिस तरह से कोटेशंस कोट किए हैं, हमें आपसे इस तरह की अपेक्षा नहीं थी। हम आपका बहुत आदर करते हैं। मेरा आपसे निवेदन है कि आप सदन में आगे से बोलें तो इस बात का ध्यान रखें कि आपके प्रति हमारे मन में जो आदर है, वह बना रहे।

MR. SPEAKER: Madam, just one minute.
Hon. Members, we had allotted two hours for the discussion of this subject. Already it has taken more than nine hours. Twenty-three Members have already spoken on this. I seek the sense of the House for extending the time of the House by one hour to complete this subject today. There are also five to six more Members to speak on this subject. So, should we extend the time by one hour?
... (Interruptions)
SOME HON. MEMBERS: Not today, tomorrow...(Interruptions)

संसदीय कार्य मंत्री तथा पर्यटन मंत्री (श्री मदन लाल खुराना): आपने कहा था कि पूरा हो गया है, आडवाणी जी जवाब देंगे।

MR. SPEAKER: No, tomorrow we have a very hectic business.
AN HON. MEMBER: This is a very important subject, Sir...(Interruptions).
MR. SPEAKER: That is why we have taken nine hours instead of two hours.
So, the time of the House is extended by one hour. Now you can continue, Madam.

कुमारी उमा भारतीः अभी आडवाणी जी ने संगमा जी की बात का उत्तर देते हुए कहा कि वे स्वयं ईसाई स्कूल में पढ़े हैं। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से संगमा जी को निमंत्रण देना चाहती हूं कि आप हाउस की डिबेट के बाद मेरे साथ मेरे घर चलिए। मैं छठे दर्जे तक पढ़ी हूं और गांव के स्कूल में पढ़ी हूं। उसके बाद मैं देश और विदेश में प्रवचन करने लगी थी। मुझे कभी ईसाई स्कूल में पढ़ने का मौका नहीं मिला। मेरे कमरे से लगा हुआ एक छोटा सा कमरा है, जो कि पूजाघर है, उसमें एक भगवान कृष्ण की मूर्ति है और दूसरी ईसा मसीह की तस्वीर लगी हुई है। मैं संगमा साहब को बताना चाहती हूं कि मैं कभी भी क्रिश्चियन स्कूल में नहीं पढ़ी हूं, लेकिन फिर भी मेरे कमरे में ईसा मसीह की तस्वीर लगी हुई है इसलिए क्योंकि मैं हिन्दू हूं। मेरे हिन्दू होने पर मुझे इसकी छूट दी गई है कि मैं भगवान कृष्ण के साथ-साथ जीसस क्राइस्ट की तस्वीर भी अपने कमरे में लगाऊं।

मैं छः वर्ष की उम्र से ही आर.एस.एस. की शाखाओं में जाती हूं और मैं बहुत ही पक्की तथा निष्ठावान आर.एस.एस. में आस्था रखने वाली हूं, क्योंकि हमारे यहां संघ में महिलाओं की अलग शाखाएं होती हैं और पुरूषों की शाखाएं अलग होती हैं। लेकिन मैं पुरूषों की शाखाओं में भी प्रवचन और भाषण देने के लिए गई हूं। इसलिए आज यदि परिष्कृत भाषा में कहें तो मैं पक्की संघी भी हूं और पक्की हिन्दू भी हूं। लेकिन मेरे कमरे में भगवान कृष्ण की तस्वीर के साथ दूसरी तस्वीर जीसस क्राइस्ट की लगी हुई है, और वहां कोई तस्वीर नहीं है। आप इस बात को लेकर चलेंगे कि क्रिश्चियन स्कूल में पढ़ने के कारण ही उदारता का भाव आता है, ऐसा नहीं है। जो गांव के स्कूल में पढ़ा है उसमें भी उदारता का भाव है, क्योंकि मैं हिन्दू हूं और हिन्दू माता-पिता की हिन्दू सन्तान हूं।

मैं जब भी अमेरिका जाती हूं, वहां जहां मैं रहती हूं उसके अगल-बगल में कोई मंदिर मुझे नहीं मिलता। आप विश्वास करें इस बात का कि जब मंगलवार का दिन आता है तो मैं हनुमान चालीसा का पाठ करने के लिए किसी चर्च में जाकर बैठती हूं, क्योंकि मुझे किसी धर्म स्थान की जरूरत होती है। मैं वहां पीछे जाकर बैठती हूं, नमस्कार करती हूं, माथा टेकती हूं और पीछे बैठकर हनुमान चालीसा का पाठ करके चली आती हूं, क्योंकि मैं उसको एक धर्म स्थान मानती हूं।

अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय संगमा से एक बात और बताना चाहती हूं। मैंने १९९२ में संन्यास लिया है और मैं संन्यासी हूं। मैं हिन्दू हूं, मैं भारतीय हूं, लेकिन मैं इस बात के लिए तैयार हूं कि अगर आप इस देश से मजहबवाद को समाप्त करना चाहते हैं, अगर साम्प्रदायिकता को समाप्त करना चाहते हैं, अगर आप चाहते हैं कि एक ऐसे व्यक्ति का निर्माण इस दुनिया की धरती पर हो जिसका मजहब से कोई सम्बन्ध न हो, जिसके अंदर ईसा की सेवा हो, जिसके अंदर हिन्दू का उपकार हो, जिसके अंदर मुसलमान की आस्था हो, जिसके अंदर जैन की अहिंसा हो, जिसके अंदर बौद्ध की करूणा हो और जिसके अंदर सिख की श्रद्धा हो तो सबसे पहले मैं इसके लिए तैयार रहूंगी कि साम्प्रदायिकतावाद से ऊपर उठकर एक ऐसे व्यक्ति का निर्माण करें जिसके अंदर सभी धर्मों के अच्छे भावों का समावेश हो। मैं आपसे पूछूंगी कि क्या आप भी इस बात के लिए तैयार होंगे? आपने जिस तरह से साम्प्रदायिकता से भरा हुआ भाषण दिया,

you have given the most communal speech.

जितने भी भाषण यहां हुए हैं, मैं सारे के सारे पढ़े हैं। आपने जिस तरह से साम्प्रदायिकता का रंग देने की कोशिश की है, माननीय शिव शंकर जी यहां मौजूद नहीं हैं।

चूंकि मुझे समय कम दिया गया है। एक-एक लाइन का उत्तर देना है। उन्होंने झाबुआ के प्रकरण में जिक्र किया है, बैकुण्ठ लाल शर्मा 'प्रेम' जो पूर्व सांसद रहे हैं और विश्व हिन्दू परिषद के पदाधिकारी हैं, मैं संगमा जी के एक वाक्य का उत्तर माननीय स्पीकर साहब के माध्यम से यह देना चाहता हूं कि अगर यहां पर शर्मा जी को किसी तरह से बुलाने का उपाय हो और शर्मा जी अगर इस बात को स्वीकार कर लें कि उन्होंने इस प्रकार का स्टेटमेंट दिया है तो कानून उनको बाद में दंड देगा, सबसे पहले मैं उनको इस बात का दंड दूंगी कि अगर उन्होंने ईसाई ननों के बलात्कार के बारे में इस तरह की कोई बात की है, मैं यह कहूंगी कि झाबुआ के प्रकरण को हमने बगैर उसकी असलियत में जाए न उछाला होता तो अच्छा होता। जिन २४ लोगों को उसमें अभियुक्त पाया गया है, उनमें से १२ लोग ईसाई पाए गए हैं तो जिस प्रकार से झाबुआ के बलात्कार कांड में वोटों की राजनीति, अल्पसंख्यकों की राजनीति करने की कोशिश की गई और हिन्दूओं और ईसाईयों के बीच में जो विभाजन की स्थिति पैदा करने की कोशिश की गई है तो यह ज़हर कहां तक फैलता? उससे वह बात खुल गई कि २४ लोगों में से १२ लोग ईसाई भी थे और जिन लोगों ने यह दुराचार किया है, वे महापापी हैं लेकिन उस दुराचार को जिसने धर्म की राजनीति बनाने की कोशिश की है, वे उनसे भी बड़े दुराचारी हैं और उनसे भी बड़े पापी हैं जिन्होंने झाबुआ के इस कांड को लेकर और हिन्दुओं और ईसाइयों के बीच में विभाजन करके इस प्रकार की राजनीति करने की कोशिश की।

PROF. A.K. PREMAJAM (BADAGARA): The statement made by the hon. Minister about culprits of Jhabua incident is not correct. They are not Christians.

MR. SPEAKER: Please do not interrupt.

कुमारी उमा भारती : आपके माध्यम से संगमा जी का एक वाक्य याद दिलाना चाहूंगीः

"O my Father, forgive them for they know not what they do."

आपने अभी जिस प्रकार की बातें संघ के बारे में कहीं और यह कहा कि हम ईसाइयों को एंटी-नेशनल कहते हैं या बी.जे.पी. के बारे में कहा कि हम ईसाइयों को एंटी-नेशनल मानते हैं, उनके चर्चों को गिरा देना चाहते हैं, ईसाइयों को देश से हम निकाल देना चाहते हैं, उसका अगर आपके पास कहीं कोई प्रमाण नहीं है, तब फिर इसलिए आपके लिए भी मैं यही कहूंगीः

O my Father, forgive him for he knows not what he says.

SHRI PURNO A. SANGMA : I do not know, but the whole world knows it.

कुमारी उमा भारती : आपको पता ही नहीं है कि क्या बोले जा रहे हैं। हम मुसलमानों की आस्था पर कभी प्रश्न चिन्ह खड़ा नहीं करते। किसी को देशभक्ति का लाइसेंस बांटने वाले हम कौन होते हैं? देशभक्ति का सर्टिफिकेट बांटने वाले हम कौन होते हैं? चूंकि मुझे आदेश मिला कि मुझे यहां पर बोलना है और मैं पहले से इसके लिए तैयार नहीं थी, इसलिए मैंने पूरी स्पीचेज को पहले पढ़ा तो मैं यह जानकर दंग रह गई कि यहां पर चर्चा तो इस बात पर होनी चाहिए थी कि अल्पसंख्यकों पर अगर अत्याचार होते हैं तो उन अत्याचारों का मूल कारण क्या होता है और उनका निदान क्या होना चाहिए लेकिन यहां पर मैंने देखा कि हर जगह पर स्पीचेज को जिस प्रकार से साम्प्रदायिक रंग देने की कोशिश की गई, पी.शिव शिंकर साहब का मैं बड़ा आदर करती हूं, वे यहां पर मौजूद नहीं हैं। उन्होंने अल्पसंख्यकों पर अत्याचार का जिक्र किया है लेकिन अल्पसंख्यकों का मतलब क्या है, इसकी व्याख्या भी इस देश में हो जानी चाहिए। अल्पसंख्यों का मतलब क्या है, इसका मतलब एक या दो समुदाय नहीं हैं। सिख भी अल्पसंख्यकों में आते हैं। इस देश में जैन, मुस्लिम और अन्य कई समुदाय भी हैं जो काफी कम संख्या में हैं और अल्संख्यक हैं।

१९८४ के दंगों में जिस प्रकार से हजारों सिखों के मुंह में पैट्रोल डालकर आग लगाई गई, जिस प्रकार से उनको भूना गया, जिस प्रकार से हजारों स्त्रियों को विधवा बनाया गया, उसका कहीं कोई जिक्र नहीं हैं। मैं तो यह सोचती थी कि पी.शिव शंकर जी जब अल्पसंख्यकों के प्रति सहानुभूति दिखाएंगे तो कश्मीर में जो हिन्दू अल्पसंख्यक हैं और जिस प्रकार से उनको विस्थापित करके जम्मू में धकेल दिया गया, जिस प्रकार से उनकी स्त्रियों पर अत्याचार किये गये, उसका भी यहां पर जिक्र होगा, इसलिए मैं पूरे सदन से निवेदन करूंगी कि जैसे झाबुआ कांड हुआ, राजकोट की घटना का भी बार-बार जिक्र किया जा रहा है, लेकिन वहां के प्रिंसिपल ने बड़े विवेक का परिचय दिया, उन्होंने लिखकर माफी मांगी कि जो न्यू टेस्टामेंट की कृति को बांटने के साथ-साथ उसमें एक फॉर्म जो प्रिंट करके लगाया गया कि मैं इस बात को मानता हूं कि ईसामसीह ही एक तारणहार हैं और ईसामसीह के अलावा कोई रास्ता नहीं है, हिन्दू बच्चों को भी कहा गया कि वे भी उस फॉर्म को भरें। मैं आपके माध्यम से कहना चाहती हूं जो आपने बातें कहीं,

one people, one nation and one culture.

वन नेशन पर तो आपको डिस्प्यूट नहीं होगा, वन पीपल पर भी दिक्कत नहीं होगी लेकिन आपको वन कल्चर पर दिक्कत आ रही होगी। वन कल्चर का मतलब धर्म नहीं होता है, वन कल्चर का मतलब मज़हब, विश्वास नहीं होता है। वन कल्चर का मतलब होता है 'वे ऑफ लिविंग' और यहां की 'वे ऑफ लिविंग' एक ही है क्योंकि कल्चर का मतलब 'भाषा, भूषा और भोजन' होता है। कल्चर का मतलब स्त्रियों के प्रति, पड़ौसियों के प्रति, हमारे अपने देश के प्रति हमारा दृष्टिकोण होता है। उस वन कल्चर के प्रति जो हमने कहा और अगर उस बात को ठीक ढंग से समझा गया और अगर आप भी ठीक ढंग से समझ गए होते तो आपको दिक्कत नहीं आती। यहां पर तीन-चार दिन में जो बातें चली हैं, मैं कहूंगी कि कुछ घटनाएं घटी होंगी और कुछ लोगों पर इसलिए घटी होंगी क्योंकि वे अल्पसंखयक तबके के लोगों से संबंधित हैं लेकिन हम उन घटनाओं की प्रशंसा नहीं करते।

उमा भारती जारी हम उनका संरक्षण करना नहीं चाहते, हम किसी भी प्रकार से उनको बचाना नहीं चाहते, वे इसके लिए दंडित हों। इसमें हमारी तरफ से और हमारी सरकार की तरफ से कभी किसी प्रकार की कोई कसर नहीं रही है, लेकिन मेरी समझ में यह नहीं आ रहा कि सेक्यूलरिज़म का मतलब क्या होता है? अंग्रेजी में एक शब्द आंटी होता है। आंटी के हिन्दी में कई अर्थ होते हैं। आंटी का अर्थ बुआ, चाची, मौसी और मामी भी होता है। मुझे लगता है कि आंटी की तरह ही सेक्यूलरिज़म शब्द हो गया है। हमें वास्तव में सेक्यूलरिज़म को समझना है, क्योंकि इसके अलग-अलग अर्थ हैं। जब संगमा साहब यहां बोलेंगे तो सेक्यूलरिज़म का अर्थ यहां अलग हो जाएगा, जब बाहर जाकर बोलेंगे तो उसका अलग अर्थ हो जाएगा। इसलिए हमें इस बात को समझना चाहिए कि हमने जो सेक्यूलरिज़म का मतलब निकाला है वह क्या निकाला है। जब जगन्नाथपुरी के शंकराचार्य जी ने एक स्त्री को वेद पढ़ने से रोका, यहां जो बंगाल और उड़ीसा के

सांसद बैठे हैं उनको याद होगा कि जगन्नाथपुरी के शंकराचार्य जी ने एक महिला को वेद पढ़ने से रोका और उसे कहा कि तुम महिला हो इसलिए तुम्हें वेद पढ़ने का अधिकार नहीं है। उसका मैंने खुद विरोध किया और जब मैंने विरोध किया तो शंकराचार्य जी के एक शिष्य ने मुझ से संपर्क किया। उन्होंने कहा कि हमने महिलाओं को वेद पढ़ने से इसलिए रोका क्योंकि अगर महिलाएं वेद पढ़ेंगी तो उनके गर्भाशय पर असर पड़ेगा, तब मैंने कहा कि आप नहीं रोक सकते, मैं एक तर्क दूंगी कि अगर पुरुष वेद पढ़ेंगे तो उनके अमाशय पर असर पड़ेगा। इसलिए मैंने कहा कि मैं इस बात का समर्थन नहीं करूंगी।

महोदय, मैं आपके माध्यम से पूरे हाउस से निवेदन करना चाहती हूं कि जब जगन्नाथपुरी के शंकराचार्य जी एक महिला को वेद पढ़ने से रोकते हैं, वेद मंत्र का उच्चारण करने से रोकते हैं तो पूरा देश उनकी निन्दा करता है, उनकी भर्तसना करता है। मेरे जैसे लोग भी उसकी निन्दा एवं भर्तसना करते हैं। वे एक तरफ शंकराचार्य जी की भर्तसना करते हैं, जो स्त्री को वेद पढ़ने से रोकते हैं और दूसरी तरफ तसलीमा नसरीन को देश में आने के लिए वीज़ा भी नहीं देते हैं। एक देश में दो धाराएं नहीं चलेंगी, एक ही धारा चलेगी, कट्टरता या उदारता की धारा चलेगी। हम इसी विचार को संस्कृति कहते हैं, यह बात हमें ध्यान में रखनी चाहिए। ऐसा नहीं कि दर्द कहीं ओर हो रहा है और दवा कहीं दूसरी जगह हो रही है। एक बार एक बच्चा खेल के मैदान में खेलने के लिए गया तो उसके पांव में चोट लग गई। जब वह घर में आया तो उसने पिता जी को बताया कि मुझे चोट लग गई है तो उसके पिता ने पहले उसे थप्पड़ मारा और कहा कि मैंने तुम्हें कहा था कि तुम खेलने के लिए मत जाना और फिर कहा कि लाओ मैं तुम्हारे पांव में दवाई लगा दूं तथा यह भी कहा कि मैं जब तक तुम्हें दवाई लगाऊंगा तब तक तुम चूं मत करना। पिता उसके पांव में दवाई लगाता रहा। दवाई लगाने के बाद भी जब दर्द ठीक नहीं हुआ तो बच्चे ने पिता जी से कहा कि दर्द तो ठीक नहीं हुई, तब पिता ने पूछा कि दर्द क्यों नहीं ठीक हुआ तो लड़के ने कहा कि चोट दाएं पांव में लगी थी और आप बाएं पांव में दवाई लगाते रहे, तब पिता ने कहा कि तुम बीच में क्यों नहीं बोले तो उसने कहा कि आपने कहा था कि बीच में मत बोलना इसलिए मैं बीच में नहीं बोल रहा था। आप सेक्यूलरिज़म का पाठ किसे पढ़ा रहे हो? इस देश के लोगों को सेक्यूलरिज़म के पाठ की जरूरत नहीं है। संगमा जी, आप एक बात पक्की मानिए, लालकृष्ण आडवाणी जी, अशोक सिंघल जी, रज्जू भैया तथा अन्य कोई भी इस देश को हिन्दू राष्ट्र, हिन्दू राज्य नहीं बनाना चाहता और कोई भी इस देश को हिन्दू राज्य नहीं बना सकता है, इसलिए इस देश को सेक्यूलरिज़म के उपदेश की भी जरूरत नहीं है। जिस देश के करोड़ों लोगों ने धरती पर पड़े हुए कंकर से लेकर आकाश में लटके हुए चांद तारों को भी पूजा हो, जिनको श्राद्ध पक्ष में अपने पूर्वजों के नाम भी नहीं मालूम, वे भी उनके भूख-प्यास की चिन्ता करते हों, जो चांद-तारे लाखों किलोमीटर दूर आकाश में लटके हुए हैं, उनके भूख-प्यास की भी जिनको चिन्ता लगती हो, उन लोगों को सेक्यूलरिज़म का पाठ पढ़ाने की जरूरत नहीं है, उनको किसी भी कीमत पर इसकी जरूरत नहीं है। जरूरत इस बात की है कि हमें इन घटनाओं की तह में जरूर जाना चाहिए। मैं इन घटनाओं की निन्दा करती हूं। जैसे मुजफ़्फ़रनगर का कांड हुआ, तंदूरी कांड हुआ वैसे ही झाबुआ का कांड हुआ। मुझे नही लगता कि अपराध करने वाले लोग मजहब को ध्यान में रख कर अपराध करते हों, अगर मजहब को ध्यान में रख कर अपराध करते हैं तो उसका कठोरतम दंड उनको मिलना चाहिए।

महोदय, यहां रामविलास जी बैठे हैं उन्होंने बहुत अच्छी स्पीच दी थी। पी. शिवशंकर जी यहां मौजूद नहीं हैं, उन्होंने भी बोला। आरिफ साहब यहां नहीं हैं, उन्होंने कई बातें कही हैं, जैसे संगमा साहब बोलते समय ईसाईयों के प्रवक्ता लग रहे थे, मैं हिन्दुओं की प्रवक्ता बन कर बोलना नहीं चाहती लेकिन मैं एक बात कहना चाहती हूं कि जब आस्था के सम्मान की बात आती है तो करोड़ों हिन्दुओं ने गणेश जी को दूध पिला दिया, इसमें किसी को क्या तकलीफ है। मान लीजिए करोड़ों हिन्दुओं को गणेश जी को दूध पिलाने में में शांति प्राप्त हुई, फेथ हिलिंग होती है। फेथ हिलिंग के नाम पर बड़ी-बड़ी कांफ्रेंसेस होती हैं।

लाखों लोग इकट्ठे होते हैं। मज़ारों पर भी भूत-प्रेत की बाधा भगाने के नाम पर लाखों लोग इकट्ठे होते हैं। अंध-विश्वास अगर गलत है तो हर जगह पर गलत है, कट्टरता अगर गलत है तो हर जगह पर गलत है। लेकिन अगर यहां से यह मैसेज जाएगा

... (व्यवधान)

श्री राम विलास पासवान (हाजीपुर) : उमा जी, गणेश जी को दूध पिलाने पर आपत्ति नहीं है। गणेश जी लड्डू खाते थे और आपने दूध पिला दिया।

कुमारी उमा भारतीः लेकिन भाई साहब, लड्डू खाकर अगर गणेश जी का हाजमा खराब हो जाए और अगर वह दूध पीना चाहें तो आपको उसमें क्या दिक्कत है? देखिये, अगर हम लगातार किसी एक समुदाय के ऊपर अटैक करेंगे और उनके मन में यह बात बैठाएगे कि किसी एक समुदाय को गिनी-पिग बनाया जा रहा है एक्सपैरीमेंट के लिए, तो मैं कहना चाहूंगी कि ऐसा मैसेज नहीं जाना चाहिए। मैं यह नहीं कहती कि मजहब के नाम पर आक्रमण नहीं होते होंगे। लेकिन आज मैं स्पीकर साहब आपके माध्यम से एक बहुत ही गंभीर निवेदन करना चाहूंगी। आप क्या चाहते हैं? आप चाहते हैं कि पूरा देश साम्प्रदायिकता से ऊपर उठकर शांति से रहे। आप चाहते हैं कि आने वाली हमारी पीढ़ियां मजहबवाद, प्रांतवाद, जातिवाद, भाई-भतीजावाद, भाषावाद से ऊपर उठकर शांति से रहे, तो उसका निदान इसी संसद में है। बाहर जो लड़ाई होती है उसके बीज इसी संसद में बोये जाते हैं। जिस तरह की स्पीच संगमा साहब और राम विलास पासवान की हुई है। राम ि वलास जी, आप मुझे क्षमा करेंगे, मैंने आपका नाम बिना 'जी' लिए बोल दिया। मैं आपको अपना बड़ा भाई मानती हूं। जिस तरह की स्पीच आरिफ मोहम्मद जी की हुई। ये भाषण ठीक नहीं हुए हैं। अगर हमें साम्प्रदायिकता को रोकना है तो संसद में बैठे हुए लोगों को यहां कदम उठाना होगा, अगर साम्प्रदायिकता की निंदा करनी है

... (व्यवधान)

मैं आपके किसी पाइंट से डिस-एग्री कर सकती हूं, लेकिन मैं आपका बहुत सम्मान करती हूं, आपको बड़ा भाई मानती हूं और इससे मैं कभी डिस-एग्री नहीं करूंगी और आप भी नहीं करेंगे। इसलिए मैं यहां संसद में बैठे हुए लोगों से आग्रह करूंगी कि जब भी इस तरह की बहस चले तो साम्प्रदायिकता से ऊपर उठकर, मजहब से ऊपर उठकर बात करें।

sanctum sanctorum of a Hindu temple?

कुमारी उमा भारतीः संगमा साहब, अगर आपने १९८४ के दंगों की निंदा की होती, अगर आपने कश्मीर के हिंदुओं को वहां से मार भगाने की निंदा की होती, तो मैं आपके सामने नत-मस्तक हो गयी होती। लेकिन आपने जो बातें कहीं, उनका कोई आधार नहीं था। आपने हमारे राजेन्द्र गुप्ता, यहां के मिनिस्टर की बात कही, जो अपनी सफाई के लिए यहां मौजूद नहीं हैं। आप रूल के नाम पर हमारे सिर पर साल-डेढ़ साल तक हथौड़े चलाते रहे, डांट पिलाते रहे। इसलिए मैं पूरे सदन से निवेदन और आग्रह करूंगी कि अगर हमें मजहब के नाम पर जो आक्रमण होते हैं उन्हें रोकना है तो इसके लिए हमें बाहर जाने की जरुरत नहीं है। यहां जितने लोग बैठे हैं और बाकी जो यहां नहीं बैठे हैं अगर वे अपने दिमागों के जाले ही ठीक कर लें और आपस में तय कर लें कि इन समस्याओं का निराकरण करना है तो इन समस्याओं का निराकरण हो जाएगा। लेकिन स्वयं साम्प्रदायिकता के रंग में रंगकर इन समस्याओं का निराकरण नहीं हो पाएगा। ऊपर उठकर ही इन समस्याओं का निराकरण हो पाएगा। अगर हम ऊपर उठकर इन्हें रोकेंगे तो मुझे विश्वास है कि माइनोरिटीज पर जो एट्रोसिटीज हो रही हैं उनको हम रोक सकेंगे। माइनोरिटीज पर जो एट्रोसिटीज होती हैं उनकी हम निंदा करते हैं। हमारे माननीय अडवाणी जी आपके सामने एक-एक बात का जवाब देने वाले हैं। मैं स्वयं व्यक्तिगत तौर पर ऐसी घटनाओं की घोर निंदा करती हूं और इन्हीं शब्दों के साथ अपनी बात समाप्त करती हूं।

SHRI G.M. BANATWALLA (PONNANI): Mr. Speaker, Sir, thank you.
Sir, it is a painful reality that the minorities of motherland India do not feel themselves and their culture secure in the country. During the recent months it cannot be denied that there has been an alarming increase in the incidence of atrocities against the minorities. The Muslims, the Christians, the Sikhs, all have been the targets. Sir, I emphasise that the attacks on minorities are attacks on the culture of our motherland India. The attacks on the minorities are attacks on Indian secularism. They are attacks on the Indian Constitution itself.

The stark reality of the situation is that attacks on minorities are the outcome of the deliberate attitude of some against the minorities encouraged by the connivance and direct or indirect complicity of those of the same colour who are in Government or in administration. Sir, if you look at the features of the various atrocities on the minorities, you will find that the outstanding feature of the attacks on minorities is not only the attitude of some but also the responsibility of the Government.

We had an Unstarred Question No.1406 in the House on the atrocities on minorities. I was also one of the persons who had raised that question. In reply, with respect to Gujarat, after mentioning just one of the incidents, the hon. Home Minister had cared to say, `Apart from this, six other minor incidents took place in Gujarat. Police has taken action and brought things under control.'

When this is the callous attitude of the Government, I must say that the alarming feature is the emboldened manner in which Golwalkarian thought and policy are sought to be implemented, implemented vigorously, by the fascist forces with the complicity of the Government.

श्री प्रभुदयाल कठेरिया (फिरोजाबाद) : यह कहना कि इसमें सरकार का हाथ है, यह आपत्तिजनक बात है। इस पर सरकार ने स्पष्टीकरण दे दिया है। माननीय गृह मंत्री ने स्पष्ट कह दिया है कि इस बारे में सरकार की नीयत साफ है। माननीय सदस्य का कहना ठीक नहीं है।

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Shri Katheria, please take your seat.
SHRI G.M. BANATWALLA (PONNANI): There is a clear and distinct echoing of the thoughts of Golwalkar who had called upon the minorities to assume Hindu names, observe Hindu festivals and so on. Accordingly, the Uttar Pradesh Government sought to impose the compulsion of singing of Vande Mataram and Saraswati Vandana in schools. This was sought to be imposed in total defiance of the Constitution, the law, and even the spirit of the Supreme Court judgment in the case of Bijoe Emmanual and Others vs. State of Kerala, AIR 1987 SC 748. The time given by you is very short and, therefore, I will only mention the case and do not go into details. But, I may remind the House of the words of wisdom of an American judge, Justice Stone, in an American case. He said:
"The very essence of liberty which they guaranteed is the freedom of the individual from compulsion as to what he shall think and what he shall say, at least where the compulsion is to bear false witness to his religion."

Sir, Golwalkarian echoes of Uttar Pradesh were heard in Karnataka also. On July 17, handbills were distributed by Bajrang Dal. Threat have been given that in schools Hindu prayers must be conducted, portraits of Hindu goddesses must be fixed, and so on.
Mr. Speaker, Sir, Ayodhya was sought to be created in Karnataka by starting the so-called movement of liberation of the Hazrat Baba Dargah there at Chikmagalur.
Look at the intensity of the situation -At Randhikpur in Gujarat. Minorities were attacked and were forced to leave the village. In the Unstarred Question that I had referred to -- put by me and others -- this was considered also as a `minor case.' ... (Interruptions)

श्रीमती भावना कर्दम दवे : अध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहती हूं कि रणभीकपुर में गुजरात गवर्नमेंट ने कानूनन वहां के अल्पसंख्यकों को संरक्षण दिया है और वह अच्छी तरह से रणभीकपुर में रहते हैं।

... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, मेरा एक पॉइंट ऑफ ऑर्डर है।

... (व्यवधान)

SHRI G.M. BANATWALLA : Therefore, such has been the response. At Banswara in Rajasthan, the Sangh Pariwar had boldly declared that `Banswara will be cleared of Christians by 2000 A.D.'
Mr. Speaker, Sir, look at the official attitude. The Srikrishna Commission Report was summarily rejected by the Government of Maharashtra... (Interruptions)
MR. SPEAKER: He is not yielding. Please take your seats.

श्रीमती भावना कर्दम दवे : अध्यक्ष जी, आप हमें बोलने नहीं देते। गुजरात सरकार ने अल्पसंख्यकों को अच्छी तरह से संरक्षण दिया है। ये कैसे इस प्रकार बोल सकते हैं?

... (व्यवधान)

SHRI G.M. BANATWALLA : A reign of terror was let loose on minorities in Maharashtra on the eve of the anniversary of demolition of the Babri Masjid on 6th December. During nights, the police knocked at the doors of Muslim houses in several localities like Govandi, Oshiwara, Partiksha Nagar and others, and asked for ration cards. They misbehaved with them and arbitrarily arrested those who were without ration cards. It is very unfortunate.
Sir, today Tamil Nadu also leads in indiscriminate large-scale arrests of the innocents.
Look at the official position. Here, in Delhi, we find that notices were served by sub-divisional magistrates saying that `your dead predecessors -- fathers or grandfathers -- were Pakistani nationals and now you come and disclose their properties.' Nobody wants to explain under what law, they were asked. Questions were asked. Five hundred such notices were issued. I want to speak in detail on this particular matter but due to constraint of time, I will be briefly mentioning my points. Sir, look at the various features of the atrocities. Dead body of a Christian there in Gujarat was dug out from the grave and thrown on the highway... (Interruptions)
SHRI HARIN PATHAK (AHMEDABAD): There is no graveyard... (Interruptions)
SHRI G.M. BANATWALLA : Sir, I should be allowed to speak. (Interruptions)

श्री हरिन पाठक (अहमदाबाद) : हमें जवाब देने का मौका मिलना चाहिए।

... (व्यवधान)

श्रीमती भावना कर्दम दवे : बीजेपी गवर्नमेंट गुजरात में अल्पसंख्यकों को अच्छी तरह से संरक्षण दे रही है।

... (व्यवधान)

SHRI G.M. BANATWALLA : Sir, the Ayodhya, Nagar Palika Parishad has passed a Resolution 16(1) saying that all the graveyards will be closed and no burial will be allowed within the limits of Ayodhya. Look at the high-handedness and the inhuman manner in which they say that no burial will be allowed in the graveyards in the limits of Ayodhya Nagar Palika Parishad. Sir, this is the height of the thing. I have written a letter to the Prime Minister regarding this matter.
It is a serious situation and the matter needs immediate attention. Such repressive measures are being taken to intimidate minorities by raiding the ancestral house of Maulana Syed Abul Hassan Ali Nadvi, the great Islamic scholar. Such is the situation.

श्री शकुनी चौधरी (खगड़िया): सर, हमारी समता पार्टी को आपने बोलने का समय नहीं दिया है, हमें भी बोलने का समय दिया जाए।

SHRI G.M. BANATWALLA : You are also impatient and I know that there is a constraint of time. So, let me conclude by saying that the destiny of our motherland, India, lies in communal harmony and communal amity. India of our vision is India where no one for even a single moment shall be ever apprehensive of his security, the security of his culture and of his way of life. That is the India of our vision where all shall march with equal opportunities and shoulder to shoulder on the path to progress so that we are wedded into one nation which may become the envy of the world.
MR. SPEAKER: You are testing my patience also!
SHRI G.M. BANATWALLA : These are the things and, therefore, as I have said the stark reality of the situation today is the vigorous manner in which the Golwalkarian thoughts and policy are sought to be implemented and that must go in the larger interests of the nation and the unity and integrity of our country.
MR. SPEAKER: Shri P. C. Thomas will speak now.
... (Interruptions)

SHRI P.C. THOMAS (MUVATTUPUZHA): Mr. Speaker, Sir, I wish that we would not have had an Agenda like this and this Agenda we had only because of the series of incidents which took place recently and I wish to add to what the hon. Member just before me has said that secular India which we all have in our hearts should be projected as a place where everyone is secure, be he a person from a majority or a minority or any religion whatsoever. Religion should not be one which divides any person in this country. It should never be and, if it is so in any way, I think there is something for introspection.
As far as some of the atrocities are concerned, almost all of them have been mentioned here. I do not want to reiterate them. But I wish to make one point here. When Gujarat Government took action against one protest which was made in a democratic way by one community here in Delhi and in all places in India, we said in Parliament that the Gujarat Government has stated that they were going to take action against any person who protested or any institution which was going to be closed on that day. It was said in Parliament at that time that no such action was going to be taken.

श्रीमती भावना कर्दम दवे : आपकी इंफॉर्मेशन गलत है। जो ग्रान्ट लेने वाली एजूकेशनल संस्थाएं होती हैं वे इस तरह से छुट्टी पर नहीं रह सकतीं।

श्रीमती भावना कर्दम दवे : अध्यक्ष महोदय, इस प्रकार से किसी भी स्कूल को धर्म के नाम पर बन्द करने की इजाजत नहीं दी जा सकती और विशेषकर तब जब स्कूल सरकारी अनुदान से चलता हो।

... (व्यवधान)

SHRI P.C. THOMAS : I have got only two minutes' time to speak. (Interruptions)
SHRI HARIN PATHAK: It was a working day.
SHRI P.C. THOMAS : How many working days do you have? On how many working days, we have all gone into a strike? Do you take any action against all those who have gone on a protest strike? (Interruptions) It was only a protest. There was only a protest from the side of the institutions. I suppose, action was taken only in Gujarat. The Union Government did not take any action. In other places, no other State Government took action.

श्री दिलीप संघाणी (अमरेली): अध्यक्ष महोदय, चूंकि गुजरात में भारतीय जनता पार्टी का अच्छा शासन चल रहा है और ये लोग नहीं चाहते कि गुजरात में अच्छा शासन चले इसलिए ये गुजरात का नाम ले रहे हैं।

... (व्यवधान)

SHRI P.C. THOMAS : This is an atrocity. This may be taken as an atrocity on a Member belonging to a small Party! (Interruptions)

श्रीमती भावना कर्दम दवे : अध्यक्ष महोदय, किसी भी ऐसी शैक्षणिक संस्था को जो प्रदेश शासन के अनुदान से चल रही है, उसे इस प्रकार से हड़ताल पर जाने की अनुमति नहीं दी जा सकती। ऐसा कोई संस्था नहीं कर सकती।

... (व्यवधान)

SHRI HARIN PATHAK : It was on a Friday. That circular was issued not only to one school but it was issued to all the schools stating that the children should not be involved in these activities. (Interruptions)
SHRI P.C. THOMAS : I am given only two minutes and out of those two minutes, they have already taken three minutes! (Interruptions)

श्री हरिन पाठक : अध्यक्ष महोदय, इस प्रकार से स्कूल को बंद कर के सड़क पर उतरने की किसी को इजाजत नहीं दी जाएगी।

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Shri Thomas, please address the Chair; do not address the Members.
SHRI P.C. THOMAS : Sir, I was trying to limit my submission to only one point.
There was a protest on the 4th December and we made it known here, we said in Parliament that one Government - I do not say the Government of Gujarat - had said that it was going to take severe action, that it was going to cut all grants to any school which was closed down that day. There was some action that they envisaged. It was then said in response, in Parliament, that nothing of that sort was going to take place. In spite of that, the management of all the schools and institutions in Gujarat which were closed on that particular day had been served notices by the officer concerned. They say that the Inspectors went on that particular day to inspect the schools and when the Inspectors went to the schools, it was found that nobody was there. They say that when it was inquired into, it was known that they were on a protest. Then, they had given a notice saying that it should be replied by the next day. Usually, seven days' time is given to reply. It was said in the show-cause notice that they should report the very next day and show cause why the grant should not be cut. Action was immediately taken. This should not be done. (Interruptions)

श्रीमती भावना कर्दम दवेः अध्यक्ष महोदय, इस प्रकार से किसी भी शैक्षणिक संस्था को वातावरण बिगाड़ने की इजाजत नहीं दी जाएगी।

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Shri Thomas, please conclude now.
SHRI P.C. THOMAS : I was trying to bring to the notice of the House that such action is being taken by a Government, the Government of Gujarat. If that is so, I think that when the hon. Minister of Home Affairs is going to reply, he will be giving a reply to it in this House. I do not want to say anything more. I think that the series of atrocities which have taken place should not continue any further and that this Government should give out a very strong statement in this House that the minorities in this country will be safe and will be protected from all sorts of atrocities.

PROF. SAIFUDDIN SOZ (BARAMULLA): Mr. Speaker, Sir, I think, a great responsibility has devolved on the hon. Prime Minister, Shri Atal Bihari Vajpayee and the hon. Minister of Home Affairs, Shri L.K. Advani.
It is a situation which is very agonising. I think, the hon. Prime Minister and the hon. Minister of Home Affairs must respond the way the nation expects. The Leader of the Shiv Sena, Shri Madhukar Sirpotdar said here that we are discussing this subject even after fifty years of Independence. Yes, it is a shame on us because there are men who subvert the Constitution of India, people who have no respect for the Constitution of India. They are all set to subvert it.

So, there is a communal tragedy and thus, we are discussing it. It is a shame on us. But somebody must go into the whole question. I was very pleasantly surprised by what my sister, Kumari Umaji has said. She said that the hathyaras - or whatever Hindi word that she used - that is, the people who commit crimes must be punished. She must also know that here in this House, Shri Sirpotdar said in his speech that they demolished the Babri Masjid. It will never be built again. That Mosque will never be built again. She called it dhancha. Kindly forget as to whether it was a Mosque or a dhancha.

The Archaeological Act of India does not allow anybody to demolish any building which is hundred years old. That Mosque was 500 years old. So, demolishing it, was a crime. Even Shri Lal Krishna Advani made a statement on that. It is very easy to say that they must be punished. I respect Kumari Uma Bharati's sentiment this time because we are on equal wave length whenever the question of nation is there. But she must rise to the occasion. She must sit with us and sort out the things and then only, her saying will influence me; otherwise, it will mean nothing. She must come forward to punish these people. When I go deep into the analysis, I want to tell this House that I satisfied myself with the hon. Home Minister's statement about Jhabua. We must put forth things before the hon. Home Minister that are correct.

We, in India, are going to the 21st century as a big nation, as a great nation. India wants to have a permanent seat in the Security Council. India has the vitality that it should have a permanent seat in the Security Council. It must have a prestige in the comity of nations. We are going to the 21st century, but we cannot go with the kind of reputation that we have earned. I am pained to say that something has happened and thus, recently the graph is showing ascendancy. The hon. Home Minister should go into this. India has a future. I have satisfied myself that India has a rich future. It will not remain just as one of big countries. It will certainly go to the level of Nehru's dreams. This time there is a unipolar system because the bipolar system is finished after the disintegration of the Soviet Union. There is such a nice situation not only in Asia, but throughout the world. China, India, Russia and America are going to be together. India will be second to none. But we have to respond to that situation. We have to remove this ailment very quickly. This is what I expect the hon. Home Minister to do.

Sir, I have to skip a lot. The minorities in this country are feeling unsafe. Shri Sirpotdar made a wrong statement because he does not have the culture and taste for history. He said:

आ गया है, आ गया नहीं हार्मनी से कन्वर्ट हो गया है।

It is the birthright of Muslims to call their land as mother-land and father-land and their own land. They are not second class citizens, at the mercy of Shiv Sena.

सब नहीं आया है। जो आया है, वह बाबर के साथ यहां मरा है और जीया है। जहांगीर हिन्दू मां का बेटा था और शाहजहां आदि जितने भी बादशाह थे, वे सब यहां गुजरे हैं। आप अंग्रेजों के साथ उस सारे दौर को भुलाने का दौर नहीं गिन सकते क्योंकि उस पर १५०० करोड़ मुसलमानों को एतराज है।

How many Moghuls came?

This is my grouse against the RSS, that they want Hindus to be revivalists, to look to the past. Looking very much to the past will be a loss to the Hindu community itself. History is like a sleeping tiger. If you awake the sleeping tiger, the first person who gets killed is the person who awakes the sleeping tiger. We must not go to the past so much.

तारीख को, इतिहास को ज्यादा खंगालने से हिन्दुस्तान का मुस्तकबिल ठीक नहीं होगा। मैं उर्दू में बोल रहा हूं। तारीख जो है, माझी जो है, वह हमारे लिए मिशाल बननी चाहिए ताकि आपके भविष्य का रास्ता खुल जाये। हिन्दुस्तान को आगे बढ़ाने के लिए माझी से सबक लेना चाहिए।

Muslims and Christians are feeling - through you, hon. Speaker, Sir, I am telling the hon. Home Minister - very insecure. It is primarily because of the hatred campaign of the RSS.

The RSS heaved a sigh of relief when the BJP came forward to form the Government. Since then I have been watching it myself that they want the revivalist movement to be strong; they want India to be a theocratic State; and in their enthusiasm they wanted to deal greatly with the administration. They went to UP; they went to technological institutions; and they went to institutions of science. They had no right to do that. That may be a cultural party and a religious party, but they are not in the Government. If they want to do that, then they must

join the Government. Before the Home Minister, they visited those places which they should not have visited. I, as a citizen of India, rise to object to that.

In due course of time, the RSS itself will become a burden for the BJP. In fact, I want the BJP to grow and evolve into a secular and national party. We shall welcome it. As long as numbers are there they have the right to rule. I cannot have any grouse on that score. But the common people and the minorities feel insecure. Even though I said that it is because of the RSS, I would like to add that it is because of the policies of the BJP also. The policies of the Government are strengthening their attitude.

I have a material with me. I cannot read this material now. This paper was presented by Dr. Murli Manohar Joshi at Paris. I have a lot of disagreement on this because it did not reflect the nation's thinking. Unfortunately, I cannot go into the details because I am speaking at the fag end on this subject. But it must go on record. In this report Dr. Joshi mentions about Aurobindo and talks of evolution. When one talks of evolution, one should accept the contributions made by Islam. I will come to that later.

MR. SPEAKER: Please conclude.

PROF. SAIFUDDIN SOZ : The Muslim community has borne the brunt of the killings, assaults and the curriculum reforms. They want to Indianise and spiritualise the Muslims and the Christians. I have a report. I will pass it on to Shri L.K. Advani because I have full faith that he would dispassionately study this. This is a report on Gujarat. If the Home Minister wants I will pass it on to him. Whatever he said about Jhabua was correct. But this is a report about Gujarat. It carries some photographs of Bardoli. A group went there and made a study.

MR. SPEAKER: Prof. Soz, you can send it to the hon. Home Minister.

PROF. SAIFUDDIN SOZ : These are proven facts as to what happened to Christians and Muslims. In this group which had gone to Gujarat all but one were Hindus. I will forward it to the hon. Home Minister with the hope that he would kindly look into this.

श्री दिलीप संघाणी : कश्मीर के बारे में बताइए।

... (व्यवधान)

प्रो. सैफ़ुद्दीन सोज़ : अगर आप चाहेंगे तो मैं कश्मीर के बारे में भी बताऊंगा। वह तो आडवाणी जी को ज्यादा पता है।

... (व्यवधान)

A religious congregation of Christians, jeevan darshan, was directly attacked.
MR. SPEAKER: Prof. Soz, please conclude.
PROF. SAIFUDDIN SOZ : Sir, I am skipping everything.
In Uttar Pradesh, there was a series of curriculum reforms. My objection is not to Vande Mataram or Saraswati Vandana as such. These are good principles and good teachings. If Shri Advani invites me to his home and wants me to sing, I can do that. ... (Interruptions) I am drawing the attention of my friends.

श्रीमती भावना कर्दम दवे : सरस्वती वंदना भारतीय संस्कृति में है और बचपन से सब लोग सरस्वती वंदना करते हैं।

... (व्यवधान)

सरस्वती वंदना कोई धर्म के स्वरूप में नहीं है।

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Prof. Soz, please conclude.
PROF. SAIFUDDIN SOZ : Sir, I am concluding.
You cannot make Saraswati Vandana or Vande Mataram compulsory because this is directly in contravention of the Constitution of India. Articles 25 and 28 say that the tax-payers' money cannot be used for promotion of any religion. That cannot be done. Nothing can be made compulsory in Government schools. Of course, you can do it in private schools.
MR. SPEAKER: Prof. Soz, please conclude.
PROF. SAIFUDDIN SOZ : I want the Home Minister to take a position on articles 25 and 28 of the Constitution of India.
MR. SPEAKER: You may conclude now.
PROF. SAIFUDDIN SOZ : I am concluding, Sir. I am skipping everything.
Before I conclude, I must say something about India itself, as to how we can build India for the future. Before that, I would like to mention about the Srikrishna Commission. I will not mention the Terms of Reference of the Commission. Shri Sirpotdar is our colleague and there is all the time for him to reform. In Srikrishna Commission Report, it is said that the individual and the organisation are held responsible. The organisation held responsible is, Shiv Sena and the individuals held responsible are, Shri Bal Thackerey, and Shri Sirpotdar. The Commission has also mentioned about Shri Bal Thackerey's admission in an interview that Muslims have to go from this country. I will not mention here the interview given by Shri Bal Thackerey to The Times magazine but this has been commented upon by Srikrishna Commission. I cannot go into the details of it. My colleague is here in his own authority. Srikrishna Commission wants him to reform. Through you and through the Home Minister, I wish to reform his thinking because there are strictures against him in the Srikrishna Commission's Report.
MR. SPEAKER: Please conclude.
PROF. SAIFUDDIN SOZ : I will take only one minute more. I wanted to say that Shri Bal Thackerey should not be allowed to make statements like this. He takes law in his hand and gives verdict or fatwa. He does not talk about law. That is what I want to say.
SHRI MADHUKAR SIRPOTDAR : He should not take the name of Shri Bal Thackerey.... (Interruptions) He can take my name. I am present in the House.
PROF. SAIFUDDIN SOZ : I have not said anything. I want you to reform your thinking. That is what Srikrishna Commission expects from you. I would like the Home Minister to ensure that nobody should be above law. We do not want a theocratic India, an India with a revivalist Hindu Movement and Chauvinism but a vibrant and strong India, an India of harmony and togetherness, India as a world power - one of the four major powers of the world. This was the dream of Jawaharlal Nehru. I would like to quote one line from his poem.
MR.SPEAKER: There is no time left now.
... (Interruptions)
SHRI AMAR ROY PRADHAN (COOCHBEHAR): Will you please allow us to speak?
MR. SPEAKER: I cannot allow anybody.
PROF. A.K. PREMAJAM (BADAGARA): Why there is this discrimination?... (Interruptions)
MR. SPEAKER: There is no time left. We have already taken 10 hours whereas the allotted time was only two hours. Please cooperate with me. Now, the Home Minister will give the reply.
... (Interruptions)

श्री शकुनी चौधरी (खगड़िया): अध्यक्ष जी, समता पार्टी को तो आपने टाइम ही नहीं दिया।

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: We have already taken 10 hours. We have been discussing this issue for the last four days. For how many hours do you want to discuss this?
... (Interruptions)

श्री मदन लाल खुराना: आप लोग ऐसा मत कीजिए। आपने प्रोमिस किया था कि इसके बाद ये जवाब देंगे।

... (व्यवधान)

SHRI N.K. PREMCHANDRAN : All the Parties represented in the House should be given an opportunity to speak.... (Interruptions)
PROF. P.J. KURIEN : Advani Ji, we want your cooperation.... (Interruptions)
SHRI MADAN LAL KHURANA: With folded hands, I would say, `no'.

अध्यक्ष महोदय : इसके अन्दर कितने लोगों को चांस दे सकते हैं?

... (Interruptions)
MR. SPEAKER: The hon. Minister is waiting for the last four days to give reply in the House.
... (Interruptions)
SHRI N.K. PREMCHANDRAN : Our Party has about five Members in the House and not a single Member has been given a chance to speak.

श्री मदन लाल खुराना : अगर ये आठ बजे जवाब देंगे तो वह न्यूज़ में तो जायेगा नहीं।

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: If this is the attitude of the Members, I cannot run the House.
19.00 hrs.
... (Interruptions)
MR. SPEAKER: There are 42 different parties in the House. I cannot accommodate all the parties. How can I accommodate all the parties?
... (Interruptions)
PROF. A.K. PREMAJAM : Sir, I have given notice. My party is the third largest party in the House. I should get an opportunity... (Interruptions)
MR. SPEAKER: Madam, from your party also somebody has spoken.
... (Interruptions)
PROF. P.J. KURIEN : Sir, kindly extend the time for one hour.
MR. SPEAKER: You please understand that the reply of the Home Minister is also very important. You have already taken ten hours.
... (Interruptions)

श्री मदन लाल खुरानाः आपने प्रॉमिस किया था कि साढ़े बजे होम मिनिस्टर जवाब देंगे, अब सात बज रहे हैं।

MAJOR GENERAL BHUVAN CHANDRA KHANDURI, AVSM : Only four Members have spoken from our party. There are ten more Members to speak... (Interruptions)

श्री मदन लाल खुरानाः आपने प्रॉमिस किया था कि इसके बाद कोई इश्यू नहीं आएगा। अब इश्यू भी सारे आने चाहिए और दस-दस घंटे एक ही बहस में लग जाते हैं, ऐसा पहले कभी नहीं हुआ।

This is not the way. Sir, you had allotted three hours. But they have already taken ten hours... (Interruptions)
SHRI N.K. PREMCHANDRAN : A person who is representing five persons in the House was given one hour and fifty minutes. But not a single person has been allowed to speak from our party.

श्री मदन लाल खुरानाः यह स्ट्रेटजी हो रही है, कल भी कोई बिल पास नहीं होने दिया, आज भी नहीं होने दिया। जब सरकारी बिजनेस आता है ये हमला करते हैं।

PROF. P.J. KURIEN : Why are you opposing? Heavens will not fall if the time is extended by one hour. You want our cooperation and if we want to speak, you will not allow. Why do you get angry for this?

खुराना जी छोड़िए, क्यों नाराज हो रहे हैं।

Sir, my Members are sitting here for the last five days throughout... (Interruptions)
MR. SPEAKER: I am also sitting. Everybody is sitting.
... (Interruptions)

श्री मदन लाल खुरानाः ठीक है फिर रिप्लाई कल होगा और आज जितने सदस्य चाहें बोल लें।

प्रो. पी.जे. कुरियन : जो बोलना चाहते हैं उनको बोलने दें।

MR. SPEAKER: There is no point of order. We are discussing about the extension of time only. I want to accommodate everybody. I have no discrimination between lady and male Members.
... (Interruptions)
MR. SPEAKER: Hon. Members, please understand that the Minister is going to reply tomorrow. If the Members agree, I seek the permission of the House to extend the time by half an hour, that is, up to 7.30 p.m. The only condition is that each Member must take only three minutes.
SHRI L.K. ADVANI : If there are Members from the Opposition who are speaking, let the Members from the Government side also get a chance. There have been so many Members from the Government side who had approached me. We had allotted their names and all of them have been waiting to speak.
PROF. P.J. KURIEN : Let it be extended by one hour.
SHRI L.K. ADVANI: I have no objection.
MR. SPEAKER: Is it the pleasure of the House to extend the time by one hour?
SEVERAL HON. MEMBERS: Yes.
MR. SPEAKER: Even in that case, each Member will speak for three to four minutes. The reply will be tomorrow.
Shri Amar Roy Pradhan to speak.

श्री अमर राय प्रधान (कूचबिहार): अध्यक्ष महोदय, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद कि आपने मुझे समय दिया।

आज देश में धर्म के नाम पर, मज़हब के नाम पर जांतपांत के नाम पर, जो अत्याचार और शोषण की घटनाएं हो रही हैं, उन्हें देखकर मुझे एक ही बात लगती है और मैं माननीय गृह मंत्री जी से जानकारी लेना चाहता हूं कि आपकी जो थ्योरी है, थीसिस है, चिंतन है, भावना है कि एक देश हिन्दू राष्ट्र, एक भाषा हिन्दी और इसलिए आप एक धर्म हिन्दू मांग रहे हैं? बहन उमा भारती जी की बात को मैंने बहुत धैर्य से सुना कि हमारे देश के संविधान में जो सैकुलरिज्म है, उसे आपने एक ढंग से हाउस में रखा। उन्होंने क्या कहा कि आंटी क्या होता है? आंटी मौसी होता है, आंटी का मतलब बुआ होता है। आडवाणी जी, मैं बहुत दुख के साथ कहना चाहता हूं कि जो ६ दिसम्बर, १९९२ को आपने बयान दिया, वह बयान बहुत गंभीरता से, बहुत धैर्य से मैंने पढ़ा भी है और सुना भी है। बाबरी मस्जिद गिरने के छः साल के बाद आपने जो भाषा बोली है, आपने जो कुछ बात कही है, जो पीड़ा, जो दुख अनुभव किया है, उसमें मैं भी अनुभवी हूं। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि यह बी.जे.पी. की सरकार अभी जो कुछ यहां किया है, वह भूलना चाहती है और नए ढंग से, सैकुलरिज्म से इस देश को चलाना चाहती है लेकिन क्या हुआ? आप शिक्षा के नाम पर आप सरस्वती वंदना चला रहे हैं। आप सिनेमा एक्टर दिलीप कुमार जी के घर पर नारे लगवा रहे हैं। आप धर्म के नाम पर बाइबल जला रहे हैं। क्या आप जानते हैं कि बाइबल जलाने से हमारे देश की इमेज गिर गई है? मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा। आपने जैसे कहा, मैं चार मिनट में अपनी बात समाप्त कर दूंगा।

अध्यक्ष महोदय : तीन मिनट में समाप्त करिए।

श्री अमर राय प्रधान : कम से कम चार मिनट कीजिए। सिर्फ बाइबल पर नहीं, आप सारे देश में आग लगा रहे हैं। हिन्दुस्तान जलता रहे और आप हिन्दुत्व का प्र चार करते रहें।

अमर राय प्रधान जारी इससे कुछ नहीं होगा, इससे तो ऐसा मालूम पड़ता है कि जैसे रोम जलता रहा और नीरो बीन बजाता रहा। अगर ऐसा यहां हुआ तो बहुत दुख की बात होगी। आपने हिन्दू दर्शन की बात की, हिन्दू दर्शन में चारवाक का दर्शन भी है, जो चारवाक विश्वास नहीं करता कि भगवान कौन है।

... (व्यवधान)

पतंजलि भगवान में विश्वास करता है, वह बोलता है कि प्रेगमेटिक के साथ समझौता करो। यह तो हमारे हिन्दू धर्म के ऊपर है। मैं ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं हूं, मैं वि द्वान व्यक्ति नहीं हूं और मैं पंडित भी नहीं हूं। आडवाणी जी, मुझे मालूम है कि आप विवेकानंद पर विश्वास करते हैं। जब वह शिकागो से वापस आए तो उन्होंने बोला-

"If you have faith in all the 330 millions of your mythological Gods and all the Gods which foreigners have now and again introduced into your midst, and still have no faith in youselves, there is no salvation for you. Have faith in yourselves and stand up on that faith and be strong. That is what we need today."
This is said by Swami Vivekananda. He was the first man in our country who said:
"I am a Communist not because of the fact that it is ideal but because half a loaf is better than nothing."

महोदय, हमारे हिन्दू धर्म के दर्शन में कई विभाग है- कोई भगवान में विश्वास करता है और कोई भगवान में विश्वास नहीं करता है। आप हिन्दू धर्म की बात कर रहे हैं, हिन्दू धर्म में तो भक्ति मार्ग के दर्शन हैं। हमारे यहां भुखमरी है, जिनके पास मकान नहीं है, कपड़ा नहीं है उनके लिए आपने क्या किया है? आप हिन्दू, मुसलमान को अलग करके देखते हैं।

"Divide and rule policy" had been adopted by the Britishers in this country and at the time of partition too, they adopted that policy. You cannot deny it. The Congress people had supported in dividing India. At that time, I think Shri Advani was a student and I was also a student. And you Hindu-Messiah people, under the leadership of Dr. Munje, had decided that partition must be there. By this way, you had divided India.

आपने साम्प्रदायिकता का बीज रोपण किया है, आप एक धर्म के साथ दूसरे धर्म को लड़ाने का मौका देते हैं, यह बात ठीक नहीं है। इस तरह हिन्दू, मुस्लिम, क्रिश्चियन बोल कर बात करना ठीक नहीं है। इस देश की जो भावना होनी चाहिए वह भावना आपने नहीं अपनाई है। यह भारत धर्म सबसे ऊंचा है, सबसे ऊपर मनुष्य श्रेष्ठ है, यह धर्म आपने नहीं माना है। मुझे आशा है कि आप सेक्यूलरिज़म की बात करेंगे और जो संविधान में है उसे मान लेंगे तथा उसे ठीक ढंग से लागू करेंगे।

श्री हरिन पाठक (अहमदाबाद) : अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद। पिछले कई दिनों से सदन एक संवेदनशील विषय पर चर्चा कर रहा है। समय का अभाव है इसलिए मैं ज्यादा नहीं बोलना चाहता। मैंने सभी माननीय सदस्यों के भाषण सुनें। मुझे इस बात का दुख है कि जो संवेदनशील मुद्दा है, जिसे लेकर हमें दर्द होता है उस मुद्दे पर बहुत कम लोगों ने अपने विचार रखे या उसकी चिन्ता जताई। महोदय, मेरे घर में मेरी बेटी की करीबन ढाई साल की एक छोटी बेटी है। वह घर में खेलते-खेलते गिर जाती है और उसे थोड़ी-बहुत चोट लगती है। हमने देखा है कि जब वह गिर जाती है तो हम उसे देखते हैं और कहते हैं कि अरे, बिटिया गिर गई तो वह चिल्लाने, रोने लगती है।

श्री हरिन पाठक : अगर उसके सामने हम नहीं देखते तो खड़ा होकर चलने लगती है, उसे पता नहीं कि वह गिर गयी है। मुझे लगता है कि हम पिछले कई दिनों से इस देश के अल्पसंख्यकों के साथ ऐसा ही व्यवहार कर रहे हैं। जो छोटे-छोटे, आइसोलेटिड, लोकल मुद्दे हैं उनको हमने अपने भाषण में बोलकर पूरे देश को ऐसा मैसेज दिया है कि पूरा अल्पसंख्यक समुदाय इस देश में सुरक्षित नहीं है। देश में कुछ लोग उनको इस देश से भगाना चाहते हैं। जो बात सदन से निकलती है, जैसा कि हमारे गृह मंत्री माननीय अडवाणी जी ने कहा कि हमारे भाषण से जो सुर निकलता है वह सुर घटनाओं की हकीकत से ज्यादा गंभीर है, बहुत ज्यादा चेतावनी वाला बनता है।

19.16 hrs. (Shri Raghuvans Prasad Singh in the Chair)

सभापति जी, अल्पसंख्यकों की परिभाषा हमें करनी होगी। यह देश इतना बड़ा है। इसमें जाति के आधार पर अल्पसंख्यक की परिभाषा नहीं हो पाएगी। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और कोहिमा से लेकर कच्छ तक कुछ ऐसे इलाके, प्रदेश और प्रांत हैं जिनमें कुछ इलाका ऐसा है जहां वे बहुसंख्यक होते हैं जबकि दूसरे इलाकों में वह कहीं अल्पसंख्यक होता है। मैं गुजरात के पंचमाल जिले के शहरो का निवासी हूं। वह एक छोटा सा गांव है। मुझे मेरे पिता जी ने बताया कि १९४८ में मेरा घर भी जलाया गया था। अब बताओ कि मैं अल्पसंख्यक हूं या बहुसंख्यक हूं। एक गरीब ब्राहमण का घर जलाया गया। हमारे ऊपर क्या गुजरी होगी। मैं राजनीति करना नहीं चाहता हूं लेकिन जब १९६९ का दंगा हुआ, सुना गया है कि उस वक्त जो कलैक्टर थे वे बाद में कांग्रेस के बड़े नेता बने। उन्होंने उस वक्त पेट्रोल की टंकियां भेजी थीं। मैं पिछले तीस साल से राजनीति में हूं और बीस साल कॉरपोरेशन में भी रहा हूं। मैंने अहमदाबाद शहर का १९७८ का दंगा देखा। वहां हर दो वर्ष बाद एक दंगा होता था। इतिहास इस बात का गवाह है कि उस समय कांग्रेस का शासन था। उस दंगे में ढाई हजार मुसलमान और एक हजार हिंदू मारे गये। अब मैं हिंदू और मुसलमानों की बात करूंगा तो आपको पसंद नहीं आयेगी। वहां ढाई हजार मुसलमानों को वोटिंग लिस्ट से नाम चुन-चुनकर मारा गया। उस वक्त गुजरात का मुख्यमंत्री और गृह मंत्री कौन था? किसकी सरकार वहां थी। केन्द्र में और गुजरात में उस समय कांग्रेस की सरकार थी। उस समय किसी को अल्पसंख्यकों की चिंता नहीं हुई।

कश्मीर से चार-पांच लाख लोगों को निकाल दिया गया और आज देश के कोने-कोने में वे पड़े हैं। उनका कसूर केवल यह था कि उन्होंने एक हिंदू मां के पेट से जन्म लिया। अपने ही देश में, अपनी ही सरकार के होते हुए उनको उनके प्रदेश में जला दिया जाता है और उनकी सम्पत्ति लूटी जाती है। उनकी किसी को चिंता नहीं और किसी ने भी नियम १९३ के अन्तर्गत उसका उल्लेख नहीं किया। पिछले १२-१४ सालों से कश्मीर के पंडितों के घरों को लूटा जाता रहा है, उनका उत्पीड़न होता रहा है। आज भी उनकी चिंता किसी को नहीं है।

... (व्यवधान)

मैंने गुजरात का उल्लेख किया। समय कम है।

मैं एक मिनट में अपनी बात पूरी करने की कोशिश करूंगा। मेरे मित्र बता रहे थे कि गुजरात सरकार ने उन स्कूलों पर नोटिस जारी किया जिन्होंने हिस्सा लिया था। मैं पूछना चाहता हूं कि चार दिसम्बर को शुक्रवार था। क्या इस देश में किसी भी शासन में स्कूलों के बच्चों को राजनीतिक और धार्मिक रैलियों में ले जाने की छूट है। कौन से संविधान में लिखा है कि स्कूल बंद कर दो। चाहे वह भाजपा की रैली हो, कम्युनिस्ट पार्टी की रैली हो या फिर किसी भी धर्म की रैली हो। वहां पर स्कूलों ने पहले से एनाऊंस कर दिया कि चार तारीख को हमारे स्कूल बंद रहेंगे। छोटे-छोटे मासूम बच्चे जिन्हें मालूम नहीं कि धर्म क्या होता है, किसको जलाया गया या मारा गया। जबर्दस्ती स्कूल के लड़कों को रैली में ले गये। सरकार ने किसी एक स्कूल पर सर्कूलर नहीं दिया था। हमारे शासन में कहा जाता है कि कोई स्कूल अपने बच्चों को राजनीति में न घसीटे। राजकोट की घटना का उल्लेख हुआ है। सभापति जी, राजकोट का यह आई.पी.मिशन स्कूल है जिसमें १८०० बच्चे हैं और जिसमें १५ बच्चे क्रिश्चियन्स हैं।

श्री पाठक : १७७५ नॉन क्रिश्चियन्स हैं। मेरे पास यह फोटोग्राफ है। नया करार न्यू टैस्टामैंट के आखिरी पन्ने में लिखा है कि मैं पापी हूं। ९-१० साल के बच्चे को कहा जाता है कि पढ़ो और कबूल करो कि मैं पापी हूं। मेरे पापों के कारण यीशु भगवान को क्रास पर चढ़ाया गया था। मासूम बच्चों के दिमाग में हीनता का भाव पैदा किया जाता है। किसी धर्म में यह नहीं कहा गया है कि कोई बच्चा पापी बने। कहा जाता है कि साइन करो कि मेरा तारणहार यही होगा। भारत का संविधान इसकी इजाजत नहीं देता। मासूम बच्चों से जबर्दस्ती लिखवाया गया और उनके साइन लिए गए। यह संविधान के खिलाफ है।

I would quote Article 28(3) and then complete my speech. I quote:
23(3). No person attending any educational institution recognised by the State or receiving aid out of State funds shall be required to take part in any religious instruction that may be imparted in such institution or to attend any religious worship that may be conducted in such institution or in any premises attached thereto unless such person or, if such person is a minor, his guardian has given his consent thereto.

मां-बाप के साइन लिए गए नहीं। बाद में स्कूल के प्रधानाचार्य ने माफी मांगी। यहां हकीकत को उल्टा करके बताया गया। कपडवंज में वाघरी समाज के लोग रहते हैं। वह कपड़ों के बदले में बर्तन बेचते हैं। वे सालों से यह काम करते हैं। उनके वहां किसी मुर्दे को दफनाया नहीं गया। वहां ४० साल से मंदिर में पूजा होती है। वह वाघरी भाइयों की बस्ती है। वह ब्राहमणवाद या किसी अपर क्लास की बस्ती नहीं है। वहां के लोगों को पादरी जबर्दस्ती पिछले करीबन पांच साल से फुसला रहा था कि क्रिश्चियन बनो, यह करो और वह करो। वाघरी समाज ने उसकी बात नहीं मानी। उनका जबर्दस्ती धर्म बदलने की कोशिश हुई। यहां सारी घटनाओं को विकृत करके रखा जाता है। हमारी सरकार चाहे केन्द्र की हो या गुजरात की हो, जब भी कोई व्यक्ति कानून को अपने हाथ में लेता है, वह नसीहत देने के लिए सख्त सजा देता है। हमें अल्पसंख्यकों के प्रति ज्यादा हमदर्दी है। हमारी सरकार ने दोषी लोगों के खिलाफ कार्यवाही कर उन्हें गिरफ्तार किया जबकि बाकी के राज्यों में गिरफ्तार भी नहीं किया गया। मुझे क्षमा करें, मुझे स्मरण है, मैंने अखबार में पढ़ा था कि आज से १०-१२ साल पहले मध्य प्रदेश की तत्कालीन सरकार ने चार मिशनरी स्कूलों के खिलाफ कार्यवाही कर एक रपट केन्द्र सरकार को भेजी थी। हमारा झगड़ा किसी कम्युनिटी से नहीं है। गरीब लोगों को जबर्दस्ती लालच देकर, फुसला कर, गरीबी हटाने के नाम पर सुविधाएं देने की बात कह कर उनकी भावनाओं के साथ खिलवाड़ होता है। उनकी आस्थाओं, मान्यताओं को परि वर्तित किया जाता है। हमें इस पर चिंतन करना चाहिए। हम सब इस पर दलगत राजनीति से ऊपर उठ कर सोचें। आडवाणी जी ने ठीक कहा कि इसमें परिवर्तन करने की जरूरत है। हम पहले अपने गिरेबान में झांके। किसी शायर ने ठीक कहा है 'मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही, यह आग कहीं न कहीं तो जलनी चाहिए, हंगामा खड़ा करना ही मेरा मकसद नहीं,मेरी कोशिश है कि देश की सूरत हम सब को बदलनी चाहिए।'

श्री जोवाकिम बक्सला (अलीपुरदुआर्स) : सभापति महोदय, आपने मुझे इस चर्चा पर बोलने का मौका दिया, इसके लिए आपको धन्यवाद देता हूं। आज जिस ि वषय पर चर्चा हो रही है, उसके प्रति सदन के सभी माननीय सदस्य ही चिंतित नहीं है बल्कि देश की समस्त जनता चिंतित है।

आज जिस ढंग से यहां चर्चा हो रही है उसकी ओर समस्त जनता देख रही है। विशेषकर अल्पसंख्यक समुदाय पर जिस तरह से अत्याचार हो रहा है, विगत आठ महीने से इस विषय पर पूरे देश के अल्पसंख्यकों विशेषकर क्रिश्चियनों में चिन्ता है। यहां माननीय सदस्यों ने बताया कि क्रिश्चियन समुदाय के शिक्षण संस्थानों पर हमला हुआ, उनकी बाइबल को जलाया गया, कहीं गड़े मुर्दे को उखाड़कर दूसरी जगह रखा गया और इस तरह विभिन्न जगहों में अल्पसंख्यक समुदायों पर अत्याचार हो रहे हैं। यह विषय हम सबके लिए चिन्ता का विषय है और विशेषकर सत्ता पक्ष के लोगों के लिए और भी चिन्ता का विषय होना चाहिए। इसे सत्ता पक्ष के सीनियर सदस्य जिस तरह से डिफेण्ड कर रहे हैं, उससे नहीं लगता है कि वे इस विषय पर सीरियसली चिन्ता कर रहे हैं कि हमारे देश के संविधान में जो प्रावधान है उसके अनुसार हर समुदाय, जाति और धर्म के लोग अपने धर्म के अनुसार अबाध गति से चल सकें, अपने धर्म का अनुकरण करते हुए अपने धर्म की चर्चा कर सकें, प्रचार कर सकें। लेकिन आज क्या देखा जा रहा है कि विशेषकर मुस्लिम और क्रिश्चियन धर्म के लोगों पर कनवर्शन के लिए विशेष तरीके से दबाव दिया जा रहा है। बीजेपी के जो साथी संगठन हैं, उनका शायद यह कहना है कि क्रिश्चियन समुदाय के पादरी, बिशप अपने क्रिश्चियन धर्म का प्रचार करते हुए दूसरे हिन्दुओं को भी क्रिश्चियन बना रहे हैं। अगर कोई किसी पर दबाव डालकर जबर्दस्ती धर्मान्तरण करता है तो इसका मैं ज़बर्दस्त विरोध करता हूं। लेकिन ऐसा कहीं नहीं देखा गया है कि क्रिश्चियन लोग इस तरह से दबाव डालकर अपने धर्म का प्रचार कर रहे हैं। अगर उन्होंने वैसा किया होता तो प्रमाण मौजूद होते। आज क्रिश्चियनों की संख्या २.६ प्रतिशत है। यह क्या साबित करता है? एक गलत संकेत इन अल्पसंख्यक मिशनरियों के बारे में दिया गया है। जैसे ही भाजपा सत्ता में आई, उनकी चिन्ता और भावना अल्पसंख्यकों के लिए देखिये कि जो क्रिश्चियन सीरियल दयासागर चल रहा था, उसको रोक दिया गया। इसलिए मैं गृह मंत्री जी से और आपसे अनुरोध करूंगा कि जो अल्पसंख्यक समुदाय पर अत्याचार हो रहे हैं, ज्यादतियां हो रही हैं, इन पर तुरंत रोक लगाई जाए ताकि सभी को अपने धर्म के प्रचार करने का मौका मिले, सभी को अपने धर्म के अनुसार चलने का मौका दिया जाए और भारत का संविधान हमारे देश की समस्त जातियों को, समस्त धर्मावलंबियों को जिस तरह से अवसर देना चाहता है, उस संविधान के प्रावधान के अनुसार हर व्यक्ति को पूरा अवसर मिले और किसी को यह बोलने का मौका न मिले कि विश्व हिन्दू परिषद, आर.एस.एस. या बजरंग दल और बीजेपी के जितने सहयोगी संगठन हैं, वे दूसरे धर्मों पर दबाव डालना चाहते हैं और दूसरे धर्म के लोग जब अपने धर्म का प्रचार करना चाहते हैं तो उन पर भी वे रोक लगाना चाहते हैं।

४ दिसंबर को दिल्ली में क्रिश्चियन समुदाय के लोगों ने जिसमें पादरी तथा बिशप लोग भी शामिल थे, प्रदर्शन किया। हालांकि क्रिश्चियन समुदाय के लोग बहुत सहिष्णु हैं, सहनशील हैं और बहुत ठंडे दिमाग वाले हैं, लेकिन उसके बाद भी उनको सड़क पर प्रदर्शन के लिए आना पड़ा, इसके कारण क्या हैं ?

इसलिए मैं सरकार से मांग करता हूं कि मूल समस्या का निदान करना अगर आप आवश्यक समझते हैं तो इस विषय पर ध्यान दिया जाए।

SHRI N. DENNIS (NAGERCOIL): Mr. Chairman, Sir, our country is multi-religious, multi-lingual and multi-cultural and it is our endeavour and anxiety to achieve `Unity in Diversity'. The number of incidents of atrocities on the minorities is on the increase and in recent years and it is increasing with unprecedented magnitude in the current year.

The freedom of religion and the rights of minorities are enshrined in articles 19 to 30 of our Constitution. Right to profess, practise and propagate religion is provided in article 25 of the Constitution. The spirit of the Preamble of our Constitution is also to promote the rights of minorities.

The protection is extended to the minorities in our Constitution and by the world bodies. But there are erosions and violations on these protections by the implementing authorities and individuals. There is interference in the administration of educational and other institutions run by minorities and thus frequently, they have to seek remedies through courts to safeguard their rights and privileges.

There are reports of several incidents of violence against minorities, namely murder and manhandling of priests, manhandling and rape of nuns, damage of Churches, hospitals, educational and other institutions run by minorities, disturbing prayer meetings, destruction of the copies of the Bible and New Testaments, harassment and violence against the Scheduled Caste and Scheduled Tribe Christians.

The violent incidents and atrocities have been pointed out in this House and also by the Press. Since the time at my disposal is very short, I would like to cite brirfly some of the atrocities. In Bihar on 2.9.97. Father Christudas was assaulted and paraded naked in the streets of Dumka. Father A.T. Thomas was murdered in Hazaribagh on 22.10.97. In Gujarat, several copies of the Bible and New Testaments were burnt in a 103-year old missionary school at Rajkot by anti-social and fundamentalist elements. In Madhya Pradesh, the incidents of brutal assault and rape of four nuns and looting was committed in a tribal village of Jhabua district. In Maharashtra, the Government rejected the Srikrishna Report on the communal riots that took place in Mumbai in 1992-93. In Rajasthan, there were widespread attacks and also harassment against the Christian schools and other educational institutions. In Uttar Pradesh, a Convent was looted at Baghpur, and a Church was attacked and destroyed at Meerut . These incidents and other atrocities would show that minorities are insecure.

Going by the recent trend of atrocities, I would like to say that the reasons behind the atrocities are political and religious. Violence against Christians has become a political pastime of politicians and anti-social elements. They try to shift the blame on Christians that convernsion is the motive behind the service.

It is a misconception to state that the number of Christians have increased by birth and conversion. The percentage of Christians as per the Census in 1961 was 2.4 per cent whereas in 1991 Census, it was 2.32 per cent. So, there is a decline in the percentage of Christians. The blame that conversion is the motive behind the service is not correct I would like t as pointed out earlier.

The Christianity had been followed in India from the first century when St. Thomas was one of the disciples of Jesus Christ who came to Kerala and some other places. It is not the import of Europeans. From the first century, including the 300 years of the British rule, now the percentage of Christians is only 2.32 per cent.

The Christians feel that they are Indians first. When we go to the Church, inside the Church, we offer worship in the Christian form. But when we come out of the Church, we feel that we are Indians.

The contribution of Christians for the progress and development of the nation is considerable particularly in the fields of education, and medicine, and other social activities. They extend these services to the poor, downtrodden and weaker sections with a service motive.

The last point is that immediate action has to be taken against the culprits. The failure of the Government to take timely and proper action is one of the main reasons for these atrocities.

So, the Government should be vigilant and it should take proper action. Rapid Action Force has to be deputed to assist the State Governments to control communal disturbances. Action should be taken against the forces which spread ill-will or hatred and communal disharmony among the people.

Communal riot prone areas have to be identified and Peace Committees have to be constituted at the District level and upto the Village level.

Lastly, an atmosphere has to be created to make the minorities feel that they could live in peace and are secure in the country. That would uphold the principles of democracy and secularism and promote unity and integrity of

the country.

श्री शकुनी चौधरी : सभापति जी, क्या समता पार्टी के सांसदों को बोलने हेतु समय देना आपकी सूची में नहीं है?

सभापति महोदय : है।

श्री शकुनी चौधरी : कब? अभी तक तीन-चार दिन इस विषय पर बहस हो चुकी है, लेकिन आपने समता पार्टी को एक मिनट का भी टाइम नहीं दिया है।

सभापति महोदय : आपका नाम है।

श्री शकुनी चौधरी : आप चेयर पर हैं, हमें बोलने का अवसर कब मिलेगा?

सभापति महोदय : इसीलिए आपको जरूर समय दिया जाएगा। कृपया बैठिए।

श्री पी.आर.किंडिया।

1936 hours
SHRI P.R. KYNDIAH (SHILLONG): Mr. Chairman, Sir, a few months ago when the hon. Home Minister came to Shillong, which is my constituency, he made a very important statement that he would invite the people of the hilly areas and the region of the North-East to adopt a cosmopolitan society. I was very much in agreement with that statement. I felt that that was a very good signal.

The other day, Shri Advani gave a statement here concerning the rape of the nuns in Jhabua, Madhya Pradesh and he condemned the action as atrocious. These are welcome signs. But at the same time, I would like to make a mention here as to what happened in the last nine months. There is a kind of a concerted action against the minorities and I would particularly refer to the Christian community as a whole.

This is the first time that there is a sharp rise in the number of atrocities against Christians as a community. I cannot say that I would blame the Government. But there are elements in the society which are trying to downgrade the character of Indian nationalism. I do not want to speak against anyone but the point at issue is this. The stark reality is that these are the incidents which have not isolated in character. They are widespread. They cover Gujarat, Maharashtra, Madhya Pradesh, Rajasthan and a number of other States. So, it is widespread in nature. Therefore, the fact remains that there are incidents which are of a widespread character, which must be admitted.

Now my point here is that this is the first time that peace-loving Christians came out in the streets on the 4th of this month. Never before they came out except in 1970s to protest against the Freedom of Religion Bill.

I just want to ask one question. Why is that the number of atrocities increased during the last nine months, after the BJP-led Government came to power? I cannot say anything critical against any person in the Government but the perception remains that the BJP is a party with a difference. That is what they claim. But it has three different faces -- the VHP, Bajrang Dal and RSS. We see the face of the BJP through the VHP; we see the face of the BJP through the Bajrang Dal; and we see the face of the BJP through the RSS. It is a split personality. It is time that the BJP Government make it clear whether the VHP, RSS and Bajrang Dal are their associates; they speak on their behalf or they speak on their own.

The BJP must dissociate itself from these organisations.

Before I conclude, I would like to say that in three States in the North-East where Christians are demographically dominant, the RSS has been spreading its tentacles. It is planning to build more than 250 temples. It is a kind of sinister design which will lead to confrontation and there will be no peace and the climate of hostility will prevail.

I would like to make one appeal to you that you come out with a White Paper and make a clear statement as to what are the steps that you are going to take in order to combat these fundamentalist outfits who are establishing hostile postures against the minorities. So, this is my appeal to you.

श्रीमती भावना कर्दम दवे (सुरेन्द्रनगर): सभापति जी, आजादी के ५० साल बाद इस सदन में हमें अल्पसंख्यकों का विषय रखना पड़ा, यह इस बात को बल देती है कि ५० साल तक जिन लोगों ने यहां शासन किया, वे सभी धार्मिक और सामाजिक समरसता स्थापित करने में विफल रहे। वैसे समय बहुत कम है परन्तु मैं दो-तीन बातें यहां पर रखना चाहती हूं क्योंकि सामने से जिन सदस्यों ने इस विषय पर वक्तव्य दिया है उसमें से ज्यादातर ने गुजरात राज्य की दो-तीन घटनाओं को लेकर हंगामा मचाया है। सत्य क्या है, उसे मैं यहां यह उजागर करना चाहती हूं। सबसे पहले तो मैं कहना चाहती हूं कि जब कहीं धुंआ उठता है तो उसके अंदर आग भी होती है। धुंआ ऐसे ही नहीं उठता, उसके अंदर आग होती है। राखी का त्यौहार हमारा राष्ट्रीय त्यौहार है जो किसी धर्म का नहीं होता। परन्तु गुजरात में राखी के दूसरे दिन एक पाठशाला में जो घटना घटी, उसकी मैं यहां याद दिलाना चाहती हूं। हम जानते हैं कि इस देश की एक हिन्दू स्त्री ने एक मुसलमान बादशाह हुमायूं को राखी बांधी थी। यह हिन्दू मुसलमान का भेद भारतीय संस्कृति या हिन्दू धर्म में नहीं है। गुजरात के बड़ौदा शहर के एक स्कूल में यह घटना घटी। वह स्कूल मिशनरी स्कूल था। राखी के दूसरे दिन जब बच्चे राखी बांधकर आये तो उन बच्चों पर दबाव डाला गया और उनसे वह राखी उतरवा ली गई। मेरे पास इस बात के सबूत हैं। जिला कलैक्टर के पास यह कम्पलेंट बच्चों के माता-पिता के जरिये दर्ज कराई गई कि हमारे बच्चों के हाथों से राखी उतरवा दी गई। सिल्वास के मिशनरी स्कूल में यह घटना घटी है। मैंने अभी पहले कहा कि जहां धुंआ उठता है, वहां आग होती है यह आग है। ... (व्यवधान) अभी तो मैंने बोलना शुरू किया है। ऐसे कैसे होगा? पांच दिन से मैं बोलने के लिए इंतजार कर रही हूं। मैं सत्य पर प्रकाश डालना चाहती हूं।

सभापति महोदय : बहुत लम्बे भाषण की गुंजाइश नहीं है।

श्रीमती भावना कर्दम दवेः आप मुझे धीरे-धीरे बोलने दीजिए। मैं जल्दी ही पूरा कर लूंगी। राजकोट के मामले के संबंध में हमारे एक भाई साहब ने जो कहा है, वह बिल्कुल असत्य है। बाइबल को किसी ने नहीं जलाया। वह इकरारनामा है जो यहां दिया गया है और जिसे पढ़कर सुनाया गया है।

मैं एक दूसरी घटना आपके सामने रखना चाहती हूं। गुजरात सरकार को बदनाम करने के लिए यहां पर दो-तीन घटनाये प्रस्तुत की गई हैं। मैं आपको यहां एक रिपोर्ट पढ़कर सुनाना चाहती हूं जो एफ.आई.आर. दर्ज की गई है।

...(व्यवधान)

मैं केवल रिपोर्ट पढ़कर सुना रही हूं। मैं अपना एक भी शब्द नहीं बोलूंगी।

Report on the incidents between Christians, VHP and Bajrang Dal workers at Baroda on 29-30 October, 1998, the Commissioner of Police, Baroda... (Interruptions)

सभापति महोदय : डिटेल्ड भाषण की जरूरत नहीं है। केवल इम्पोर्टेंट प्वाइंट बतला दीजिए।

श्रीमती भावना कर्दम दवे : मैं तो केवल सत्य पर प्रकाश डालना चाहती हूं। मैं असत्य नहीं बोलना चाहती। यह पुलिस रिपोर्ट है, २९ तारीख को पुलिस में एफ.आई.आर. दर्ज की गई है। एफ.आई.आर. दर्ज करने वाले ने लिखा है,

"According to the Police Report dated the 29th, some boys who had come from outside Gujarat left the venue and approached the Press with complaints that they had not been given food by the organisation. The Press passed this information to VHP workers, who along with the Bajrang Dal members and others in the Vidyalaya started...."

सभापति महोदय : जो पढ़ रही हैं, उसे पढ़ा हुआ मान लिया। अब समाप्त कीजिए।

SHRIMATI BHAVNA KARDAM DAVE : Two complaints have been lodged subsequently with the Feteganj Police Station, FIR 346/98 under Section l53A.

एक मिनट सुन लीजिए।

... (व्यवधान)

मैं रिपोर्ट लेकर आई हूं।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : ठीक है।

... (व्यवधान)

SHRIMATI BHAVNA KARDAM DAVE : It is written:
"The complaint of Chetan Bhai Sankare Bhai, Parvi Taluka, against Mrs. Grace Mathew, organiser of the Christian Sammelan alleging that they were coercing the participants to take to Hinduism and to convert..."

सभापति महोदय : एक्सप्लेन मत कीजिए, केवल प्वाइंटस बताइए।

PROF. A.K. PREMAJAM (BADAGARA): I thank you for the opportunity given to me. I have been waiting here for five days to get this opportunity. A very serious and a very passionate discussion has gone by on this issue under Rule l93 and here in my opinion there are two important issues involved in respect of this discussion on the atrocities on minorities.

One is the human rights issue and the other is the unity and integrity of India. Many speakers from the Treasury Benches have been saying that Hindus are the majority and they constitute 85 per cent of the population and that the Hindu majority are being put to difficulties. I am a born Hindu but I do not subscribe to the views expressed by the people from the Treasury Benches and what I want to make clear is that the majority of the Hindus who form 85 per cent of the total population do not subscribe to the views expressed by the Members of the Treasury Benches.

I wanted to make this clear. Though I am a born Hindu I do not subscribe to this view and what I want to make doubly sure is that this is not the view actually expressed by or felt by a majority of the Hindus who form 85 per cent of the population. (Interruptions)

Do not disturb me.

I am a born Hindu. I know what Hinduism is. This culture is mosaic. I am a student of history also. I wanted to make this clear to the entire nation -- not merely to the Members of this House but to the entire nation -- that this is a mosaic culture and it is a pluralistic culture, it is a composite culture and from time immemorial persons were coming to from other countries.

MR. CHAIRMAN: Please conclude.

PROF. A.K. PREMAJAM : I am speaking on behalf of my party. Two others from my party have dropped. I must get enough compensating time.

So many have come from ancient times onwards. Aryans, Khushans, Scythians, Sagas. Parthians and several others came. Then later came the Muslims and the Christians also. We cannot wipe off all these features of culture. We cannot wipe off all those people. What I wanted to make clear is that the human rights are involved here with atrocities committed on the minorities especially the Muslims and the Christians.

Our Constitution guarantees Fundamental Rights to all individuals plus special rights to minorities, the right to live, right to freedom of expression and to profess our religion also. Here the bogey raised is about conversions and foreigners.

Recently on the l4th November an incident took place in my State involving some Brothers and some Missionaries.

MR. CHAIRMAN: Shri Shakuni Choudhary.

PROF. A.K. PREMAJAM : I want to speak for two more minutes. I am not given an opportunity.

I want to say that the Home Minister has made a statement about Jhabua that Christians were involved. That is wrong. I had been to that place and met the Police authorities. Actually, the persons involved were some Adi Vasis belonging to the Bhil community. I want to make it clear that Christians were not responsible for this incident.

Another thing is, whenever there is atrocity, the justification given is, the bogey of conversion and foreigners. Christians and Muslims are actually part of the country. From time immemorial, many have come to India. Babri Masjid cannot be brought back to life. It was part of our culture. Now, the hon. Prime Minister and the Home Minister have said certain things in retrospect. But Babri Masjid cannot be brought back to life.

श्री शकुनी चौधरी : सभापति जी, आपने मुझे जो मौका दिया, इसके लिए मैं चेयर को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि आज जो कई दिनों से अल्पसंख्यकों पर अत्याचार की बातें चल रही हैं

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : अगर आपके पास लिखित भाषण है तो सदन के पटल पर रख दिया जाये, उसे पढ़ा हुआ माना जायेगा।

... (व्यवधान)

श्री शकुनी चौधरी : हमें इस बात से आश्चर्य हुआ। आप यह क्या करवा रहे हैं, आप चेयर से कण्ट्रोल कीजिए न। आप चेयर से कण्ट्रोल कीजिए, अभी बहुत से लोग हैं, आप क्या कीजिएगा। अभी कई लोग हैं।

... (व्यवधान)

PROF. A.K. PREMAJAM : In my own State of Kerala, there was an incident where two brothers belonging to the Jacobite community had been attacked. Here also, the justification given was, conversion and foreigners.

सभापति महोदय : इनका खत्म हो गया। इनका भाषण समाप्त हुआ, इनकी बात रिकार्ड पर नहीं जायेगी। उनका रिकार्ड में नहीं जा रहा है।

(व्यवधान)

श्री शकुनी चौधरी : फिर लोग कहेंगे कि महिलाओं पर अत्याचार हो रहा है।

सभापति महोदय : ये बोल रहे हैं, आपका भाषण समाप्त हुआ।

... (व्यवधान)

श्री शकुनी चौधरी : सभापति जी, अगर मैं कुछ बोलूंगा

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : बोलिये न, इनकी बात प्रोसिडिंग्स में नहीं जा रही है।

(व्यवधान)

श्री शकुनी चौधरी : यह क्या हो रहा है?

सभापति जी, अभी कई दिनों से सभी माननीय सदस्यों की बातें मैं सुन रहा था। सभापति महोदय : आपका समय समाप्त हो गया।

श्री शकुनी चौधरी : मुझे यह अनुभव हो रहा था कि ऐसा कोई समय नहीं है, अभी तक जितनी बार डिबेट हुई, इसमें यह बाबरी मस्जिद जरूर रहती है। बाबरी मस्जिद पर लोग जरूर बोलेंगे, चाहे जितनी बार सदन में बहस हो। मैंने अनुभव किया कि जब सभी वर्ग के लोग यहां बोल रहे थे, चाहे वे मुसलमान की तरफ से मुस्लिम भाई बोल रहे थे, चाहे क्रिश्चियन की तरफ से माननीय सदस्य संगमा साहब बोल रहे थे या और जितनी पार्टी के लोग हैं, मुझे यह अनुभव हो रहा था कि सही में यहां ये धार्मिक नेता लोग आये हुए हैं, ये धार्मिक नेता की तरह बोलते हैं और सही में अगर पूछिये कि इस सदन से आम लोगों में जो मैसेज जाता है, यह निश्चित रूप से साबित करता है कि जब यहां इस तरह

* Not Recorded.

का वातावरण है, लोगों को जो मैसेज मिलता है, वह गलत मैसेज है। १९९२ में मस्जिद टूटी लेकिन आज तक कोई सदन ऐसा नहीं है, जिसमें कि बार-बार डिबेट में यह दोहराया पहले जब चुनाव हो रहा था तो चुनाव के पहले कहा जाता था कि अगर भाजपा की सरकार बनी तो आपका वोटिंग राइट खत्म कर देगी और आप सबसे ज्यादा बोलते थे, हमें याद है, आप अभी चेयर पर हैं इसलिए मैं यह बोलना नहीं चाहता, । उसमें कुछ कहना नहीं है।

डा. शकील अहमद (मधुबनी) : यह गलत है, इसको आप प्रोसिडिंग्स से निकलवाइये। आप यहां चेयर को कुछ नहीं कह सकते। यहां जो बैठे हुए हैं, आप उनको बोलिये।

श्री शकुनी चौधरी : सभापति जी, आप पहले अनुभव कीजिए कि बाबरी मस्जिद से पहले आपने ही क्या-क्या कहा है।

सभापति महोदय : आसन के बारे में बातें एक्सपंज की जायें।

श्री शकुनी चौधरी : मैं सांसद के रूप में बिहार से ही आता हूं। आपके लालू जी क्या-क्या नहीं बोले, जरा यह याद कीजिए। मैं अब उसका ज्यादा वर्णन करना नहीं चाहूंगा।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : सबजैक्ट माइनोरिटी एट्रासिटीज़ का है।

श्री शकुनी चौधरी : मैं बस इतना ही चाहूंगा कि आपने जो-जो नारे, जो-जो स्लोगन दिये थे, आपने पाया कि भाजपा और समता पार्टी की मिली-जुली सरकार को आठ महीने शासन में हो गये, एक भी दंगा नहीं हुआ और आपके इतिहास को अगर १९४८ से लेकर देखा जाये तो दंगों का सिलसिला अगर मैं यहां बताने लगूंगा तो शायद एक दिन और मुझे भाषण देना पड़ेगा।

... (व्यवधान)

अभी तो हमने भाषण शुरू भी नहीं किया है, आपने तो पहले ही घंटी बजा दी।

सभापति महोदय : इस पर क्या बोलियेगा।

श्री शकुनी चौधरी : हम आपसे इतना ही कहना चाहते हैं, आप अनुभव करते हुए जानिये, मैं आप सभी माननीय सदस्यों से भी आग्रह करता हूं कि सदन में कोई भी बात ऐसी नहीं उठाई जाये, जिससे इसका बुरा असर गांव, देहात तक पहुंचे। इसलिए हम चाहते हैं कि आप कोई भी धार्मिक बात यहां नहीं कहें।

* Expunged as ordered by the Chair

सभी धर्म बराबर हैं। धर्म तो यह सिखाता है कि किसी से कोई द्वन्द्व नहीं हो। आप दो मिनट सुनिये, हम आपको यह बताना चाहते हैं कि धर्म तो खुदा के पास जाने का एक रास्ता है, धर्म तो भगवान के पास जाने का एक रास्ता है, जिस तरह दिल्ली आने के लिए कोई हरियाणा से आता है, कोई ग्वालियार से आता है,

श्री शकुनी चौधरी : कोई लखनऊ से आता है, उसी तरह धर्म भी है, जो सभी जगह से आकर भगवान और खुदा तक पहुंचता है, फिर बीच में क्या लड़ाई है, कोई लड़ाई नहीं होनी चाहिए। जो लोग ऐसी लड़ाई लड़ते हैं वे भारत को नहीं जानते, न उनको कोई ज्ञान है। जो ऐसा काम कराते हैं मैं उनसे भी आग्रह करूंगा कि कम से कम देश को ऐसी बातों से बचाइए। अभी-अभी हमारे वहां डी.एस.पी. की हत्या हुई। आपकी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के घर में गोली मारकर हत्या की गई। राजद के युवा अध्यक्ष हैं, वह क्रिमिनल मुस्लिम समुदाय के थे तो मैं क्या यह कहूं कि मुस्लिम समुदाय ने ऐसा किया, नहीं, ऐसा नही होना चाहिए। यह कोई साम्प्रदायिक मामला नहीं है, वहां डी.एस.पी. की हत्या हुई है और सिर्फ हत्या का मामला है। इसलिए हमें ऐसी बातें करके लोगों को गुमराह नहीं करना चाहिए। इससे तो यही पता चलता है कि आप लोग सिर्फ वोटों के लिए ही यह साबित करना चाहते हैं कि उनके वोट कैसे हम खींच सकें। आपके मन में सिर्फ यही भावना है और इसके सिवा कोई दूसरी भावना नहीं है।

श्री हीरा लाल राय (छपरा): सभापति महोदय, यह देश बहुत बड़ा है, यहां तरह-तरह के लोग रहते हैं। हम सब लोग मिलकर रहते आए हैं। राष्ट्रीय आंदोलन के दिनों में भी हमारी शिक्षा-दीक्षा इस बात की हुआ करती थी। उस समय गांधी जी हमेशा गाते थे और कहते थे - हिन्दू-मुस्लिम तेरा नाम सबको सम्मति दे भगवान। लेकि आज ५० साल के बाद भी हम कुछ न कुछ और किसी न किसी रूप में इस बीमारी के शिकार हैं। आज अल्पसंख्यक चाहे वे सिख हों, मुसलमान हों या ईसाई हों, सबके साथ ऐसी वारदातें हो रही हैं, इससे इनकार नहीं किया जा सकता। मैं कहना चाहता हूं चौधरी जी कि तस्वीर उलटने पर कहीं पर निगाहें कहीं पर निशाना, फिर उलटाओ तो ईश्वर-अल्लाह तेरो नाम, सबको सन्मति दे राम। आप जब कांग्रेस में थे तो दूसरा भाषण दिया करते थे, आज इधर आ गए हैं तो लालू जी और डी.एस.पी. पर भाषण दे रहे हैं। मैं कहना चाहता हूं कि कोई भी बात अगर गलत है तो वह गलत ही होनी चाहिए, चाहे किसी भी पक्ष की तरफ से हो। यहां दोनों पक्षों ने स्वीकार किया है कि देश में असंख्य वारदातें हो रही हैं। शिव सेना के नेता ने भी स्वीकार किया है, दूसरे नेताओं ने भी स्वीकार किया है और हमारे गृह मंत्री जी ने भी स्वीकार किया है कि वारदातें होती हैं, इनको रोकना देश का फर्ज है। आज आप इस स्थिति में हैं, हो सकता है कल न हों इसलिए हिन्दू-मुस्लिम की बात को निकाला जाए। आज आपको देश चलाना है और इस जवाबदेही से आप बच नहीं सकते। आज आप कटघरे में खड़े हैं, सही जगह पर हैं, जहां आपकी परीक्षा होने वाली है।

इस सदन में संगमा जी पर बड़ा अटैक किया गया। वे सदन के स्पीकर रह चुके हैं और बड़े नेता हैं। वे स्वयं क्रिश्चियन हैं। उन्होंने कहा कि क्रिश्चियंस पर अत्याचार होते हैं, तो क्या गलत कहा। लेकिन हमारी मंत्री जी ने उनके लिए पता नहीं क्या-क्या नहीं कहा और यह भी कहा कि मैं क्या-क्या हूं। इस तरह से उन्होंने

यहां पर धर्मनिरपेक्षता पर भाषण दिया। आज जरूरत इस बात की है कि आपने देश की बागडोर सम्भाली है तो लोगों पर, अल्पसंख्यकों पर जो अत्याचार होते हैं, उनको रोकने में आपका सहयोग मिलना चाहिए। आपका कर्ततव्य होता है कि आप गलत नीयत या निष्ठा से कोई काम न करें। आप पांच-छः साल पहले जो थे, वह अब न रहें, नहीं तो देश नहीं चलेगा। इसका सबूत अभी मिल भी गया है कि आठ महीने के शासन में आपने तीन राज्य हाथ से निकाल दिए हैं। इसलिए इस देश में अल्पसंख्यकों पर अत्याचार बंद हों। इतना ही मुझे निवेदन करना है।

SHRI V.M. SUDHEERAN (ALLEPPEY): Sir, it is a fact that atrocities on minorities are increasing. According to the survey conducted by the United Christians Forum for Human Rights, the number of attacks on Christians this year alone outnumbered the total number of atrocities against the community between 1964 and 1997. It is shameful, shocking and alarming. I shall be very brief because of the constraint of time.

At the outset, the increasing atrocities on Christians in several States, the mysterious police raid on the residence of the distinguished Muslim theologian and the attempts of the Sangh Parivar to repeat Ayodhya in Chikmagalur, have all contributed a sense of insecurity among the minorities.

Sir, to contain such atrocities once and for all and to ensure the constitutional freedom and right, effective political and administrative steps have to be taken immediately. Now, the question is whether the Government has the political will to protect the minorities. For this, the Government and the ruling party have to change their attitudes convincingly. Perfect democratic and secular approaches are highly necessary.

I would suggest some points in this regard. Let the Government convene a meeting of all the political parties to discuss and formulate necessary steps to create an atmosphere in which the minorities feel secured. The next point is that the Government should come forward with a White Paper during the current Session itself on the crimes committed on the Christian missionaries, nuns and institutions, and other minorities, including Muslims. An urgent meeting of the Chief Ministers should be convened to review the action taken so far, and to chalk out effective measures to contain such atrocities. An official-level monitoring cell, headed by the Cabinet Secretary, be formed to monitor the follow-up steps of the decisions taken at the Chief Ministers' Conference. State-level minority protection cells, headed by the Chief Secretaries of the respective States, be set up. A special task force, headed by an IGP, be created under the guidance and supervision of this cell to exclusively deal with such atrocities.

Finally, I would request the hon. Home Minister that a permanent Joint Parliamentary Committee be set up to look after the welfare of the minorities, and to see that the constitutional freedom and right of the minorities are protected.

I would request the Government to act to protect the minorities or quit. Those who fail to protect minorities have no right to govern.

SHRI SATYA PAL JAIN (CHANDIGARH): Now, the Members of all the parties have spoken.

श्री जगत वीर सिंह द्रोण (कानपुर): बहुत सारे लोग अल्पसंख्यक हैं और श्रोता बहुसंख्यक हैं। इन अल्पसंख्यकों द्वारा बहुसंख्यकों पर घोर अत्याचार हो रहा है।

*m18

श्री मोतीलाल वोरा (राजनांदगांव): सभापति जी, जिस विषय पर हम लोग इस सदन में चर्चा कर रहे हैं, वह सचमुच बहुत महत्वपूर्ण विषय है। अल्पसंख्यकों पर देश के कई हिस्सों में पिछले कुछ महीनों में जो अत्याचार की घटनाएं घटित हो रही हैं, वे देश के सदभावना के वातावरण को तोड़ने वाली, देश में सदभावना का वातावरण जो वर्षों से रहा है, उसे छिन्न-भिन्न करने वाली हैं। वहां की कुछ घटनाओं को अगर आप देखेंगे तो आपको ऐसा लगेगा कि जो क्रिश्चियन समुदाय के लोग हैं, उन पर पिछले आठ महीनों में जिस प्रकार से अत्याचार की घटनाएं हुई हैं, मेरे पास पूरी सूची है, आडवाणी जी के पास भी होगी, वह देश के होम मिनिस्टर हैं, इस नाते उनके पास होनी चाहिए। गुजरात में सर्वाधिक अठारह घटनाएं पिछले आठ महीनों में ईसाई धर्म के मानना वालों पर हुई हैं। यह वातावरण आखिर क्यों खराब हुआ? छः दिसम्बर, १९९२ की घटना के बाद, वहां इस घटना को लोग भूलने की कोशिश करने के बावजूद भी भुला नहीं पा रहे हैं। उसका 'शौर्य दिवस' के रूप में मनाया जाना, बजरंग दल तथा विश्व हिन्दू परिषद का कर्नाटक के चिकमंगलूर के बदनगिरि में इस प्रकार से कहना कि जिस प्रकार से हमने अयोध्या में बाबरी मस्जिद को गिराया था, उसी प्रकार से हम मथुरा और काशी में भी करेंगे, उस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति की धमकी देना, मैं समझता हूं कि आडवाणी जी पर एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। इस देश में सदभावना का वातावरण बने, हम इस प्रकार का प्रयत्न करें कि अल्पसंख्यक चाहे वे मुसलमान, सिख, बौद्ध, जैन या ईसाई हों या किसी भी अल्पसंख्यक श्रेणी में आते हों, उन पर अत्याचार की घटनाओं की पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए।

मोती लाल वोरा जारी महोदय, मेरे पास कहने के लिए तो बहुत कुछ था लेकिन आपने मुझे एक-दो मिनट का समय दिया है इसलिए मैं एक बात यह कहना चाहता हूं-

"One should strive for a society where everybody is happy and healthy."

सभापति जी, आप बिहार से आते हैं। हमारा देश 'सर्वे भवंतु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया,' वाला रहा है। यह गांधी, गोतम, बुद्ध और महावीर का देश है। हमारे देश में इस प्रकार की घटनाओं का घटित होना सचमुच में हम सब लोगों के लिए अच्छी बात नहीं है, अफसोस की बात है। इस प्रकार की घटनाएं न घटें और अल्पसंख्यकों पर किसी प्रकार के अत्याचार न हों। इसके साथ ही मैं एक बात ओर कहना चाहता हूं-

'उजाले अपनी यादों को हमारे साथ रहने दो, न जाने जिन्दगी की किस गली में शाम हो जाए।'

सभापति जी, किस गली में शाम हो सकती है, कौन सी पार्टी देश में सत्ता में आ सकती है, कौन सी पार्टी नहीं आएगी, यह कोई नहीं जानता, यह इस देश के मतदाता के हाथ में है। मेरा आपके माध्यम से केवल एक ही निवेदन है, हम सब लोगों को यही कहना है- 'ईश्वर अल्लाह तेरे नाम, सब को सन्मति दे भगवान।' अगर सब को सन्मति मिल गई तो इस देश में सदभावना का वातावरण रहेगा और फिर देश में इस प्रकार की घटनाएं नहीं घटेंगी।

सभापति जी, आपने मुझे बोलने का समय दिया, इसके लिए आपको धन्यवाद।

SHRI B.M. MENSINKAI (DHARWAR SOUTH): Mr Chairman Sir, we are three members in this House from Lok Shakti and therefore I request you to give me enough time to speak on this vital issue.
I thank you for giving me an opportunity to speak on this very important subject. There is steep increase in the number of atrocities committed on minorities.
Sir, there are too many communities which belong to minorities. In fact, the word minority has lost its meaning. In Karnataka for example Lingayats, Vokkaligar, Kurubar, Muslims and many other communities come under minorities. I therefore feel that the word minority and its protection has lost its meaning. I also think that we need not waste the precious time of this august House by discussing this elaborately.
In our country, during 12th century the great Saint Bhakti Bhandari Basavanna had preached and practiced only one Dharma which included all the communities of the society. He also practiced and encouraged the people about the concept of only one God.
MR CHAIRMAN: Did you give notice that you are speaking in Kannada.
SHRI B.M. MENSINKAI: Yes Sir, I have given the notice
* Translation of the speech originally delivered in Kannada.
SHRI B.M. MENSINKAI (DHARWARD SOUTH): Mr. Chairman, Sir ... (Interruptions)

सभापति महोदय : आपने इस भाषा में बोलने के लिए सूचना नहीं दी थी।

श्री बी.एम. मेनसिंकाई : नहीं।

I have already submitted that in my prayer.

सभापति महोदय : इसके लिए सूचना देनी पड़ती है। अब आप जल्दी समाप्त करिए।

SHRI B.M. MENSINKAI : Since there is no translation, I will speak in English. It is the political parties who must learn the things first. There is unity among all the castes in the villages. But it is the political parties which are encouraging these things by dividing the people as `minority' or `majority'. In the Twelfth Century, Basaveswara taught that the objective of all religions is the same. That is why, I request the people to follow that principle.
There are two temples in Karnataka -- one is, Sirhatti Fakkireswara Temple; and the other is, Huluguru Temple -- where both Hindus and Muslims offer their prayers to the God.
Therefore, I appeal to the Government that it should not interfere in the personal lives of the villagers. The political parties should learn the things first so that communal harmony could be maintained.
It is a known fact that both Hindus and Muslims use the loudspeakers in the morning, around 4.30 a.m., to propagate their religion. This should be stopped immediately so that people in the cities and villages can sleep well without any disturbance. They can use the loudspeakers after 6 o'clock in the morning.

SHRI FRANCISCO SARDINHA (MARMAGOA): Mr. Chairman, Sir, one of the legacies that has been left behind for us by our elders is our Constitution, which is sacred. It enshrines the freedom of religion and freedom of thought and expression. If you see now, the minorities are feeling a sense of insecurity and it is a matter of great concern to the right thinking Indians as to what would happen to the age-old harmony of the people belonging to various cultures and religions in this country.

Sir, it has been observed from the reports available that violent incidents, especially against the minorities are on the increase. In fact, if you see, the number of instances this year are more than all the instances put together since Independence.

Sir, who could deny, including our hon. Home Minister, that wherever the Christian missionaries have gone, they have helped in spreading education, both quantitatively and qualitatively? The missionaries and nuns have gone to every nook and corner of this country for spreading education and improving the health care of the poor people.

Sir, what do we see? Many of the leaders want their children to study in those schools and colleges and after that they become fundamentalists and go against the very culture which these missionaries are spreading. Look at the States where violence is on the increase. The States are, Gujarat, Rajasthan, Uttar Pradesh and Karnataka. The maximum instances are in the State of Gujarat. The minorities feel that with the advent of the BJP rule at the Centre, the figures are on the increase.

Sir, the Christians have not only the right to their faith but they have every right to profess and preach whatever they want, of course, within certain parameters of the Constitution. My hon. colleagues on the other side have been saying that the faith has been professed and preached forcibly. It is all false. My hon. colleagues have been speaking about partition; they have been talking about atrocities against Sikhs. What do they mean by all these? Do they want to justify the things that are happening now, in this very year? Let us all stand up and get together and condemn whatever is happening. Let us not forget that the Christians also belong to this country.

Sir, I belong to the State of Goa where we have got a lot of Christians, Hindus and Muslims. But there all are living together in harmony. This is for the country to know that we have got a Uniform Code. I would like to bring this to the notice of the hon. Home Minister that we have got a Uniform Code, both for religion and gender, in the State of Goa. There is no distinction.

Sir, finally I would like to submit that all these can happen only if the Government has the mind to implement it. Whatever we say and do here is not enough. This has to percolate to every State. Every State should know that we are living in a democratic country and not in a theocratic country. I would like to request the hon. Home Minister to send a message to every State and show that we really mean that these things would have to be stopped. All these communities, all these people who are following different faiths belong to the same motherland, to the same country -- Bharat. Unless every human being living in this country is free to practice any faith and religion, whatever he wants, nobody would be happy in this country. So, I would once again like to request the hon. Home Minister to issue a White Paper on this. The hon. Home Minister has said that half the people, those who had raped the nuns, were Christians ... (Interruptions) We do not know.

We go by the newspaper reports. That is the reason we expect the hon. Home Minister to present a White Paper on this subject.

2016 hrs

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on
Wednesday, December 16, 1998/Agrahayana 25, 1920 (Saka).